किलोल

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

वर्ष 5 अंक 04, अप्रैल 2021

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य 80/-

अनुक्रमाणिका

सद्भाव 5

सवेरा 6

दूध 7

पंचतंत्र की कथाएँ-मित्र-द्रोह का परिणाम 9

खिलौना 11

बाबा रविदास 13

बंदर मामा 14

हमारे पौराणिक पात्र-महर्षि पतंजलि 15

धरती माता 17

मेरी दीदी 18

ज्ञान की पाती-विश्व धरोहर दिवस 19

आया बसंत 22

गुड़िया रानी 24

अधूरी कहानी पूरी करो 25

टीचर जी! मुझे भी देखिए 25

शालिनी पंकज दुबे द्वारा पूरी की गई कहानी 27

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी 28

टेकराम ध्रुव 'दिनेश' द्वारा पूरी की गई कहानी 29

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 30

आकाश और क्रिकेट 30

मीठा चार 32

पहेलियाँ 33

The Primary Education 35

चिड़िया रानी 36

आलसी राम 37

प्यारा श्यामु....38
सीखना सिखायेंगे....39
माटी-तिलक लगाथे....40
हमारा शरीर....41
अच्छी आदतें....43
रूख-राइ ल देंवता जानौ....45
हमारे प्रेरणास्रोत-मैंगते चंग्नेइजैंग मैरी कॉम....47
मोबाइल....49
तितली आई....50
सफलता की कहानी-आगे बढ़ने की चाह....52
मिठुआ आम....54
गाँव छोड़ शहर की ओर चला....55
नटखट नन्ही....56
होली का त्यौहार....58
ज्ञान की पाती-विश्व पेंगुइन दिवस....59
महाशिवरात्रि....61
किचन गार्डन....62
जंगल में होली....64
चलो स्कूल....66
भोले भंडारी....68
स्कूल की यादें....70
नमक....72
पैसा....73
अनोखा बस्तर के अनोखे समाधि स्तंभ....74
चलो ज्ञान की दीप जलाएं....77
गलियों से स्कूल तक....79

आलसी किसान 81
जंगल में होली 83
शहादत को सलाम 85
प्रशंसा एवं चापलूसी 88
बस्तर के समाधि स्तंभ 93
फन्नस कुआ 95
चंदा मामा 96
शेखीबाज छगन 97
व्हाट्सएप 100
तोर महिमा महान 101
चीन को चेतावनी 103
चित्र देख कर कहानी लिखो 104
संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी 105
बारिश का वह दिन 105
शालिनीपंकज दुबे द्वारा भेजी गई कहानी 106
बारिश का वह दिन 106
अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 107
गूंगे की वाणी 108
शबरी 109
बेटी 110
मड़ई मेला 112
भाखा जनऊला 114

संपादक

डॉ. आलोक शुक्ला

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, द्रोण साहू, डॉ. शिप्रा बेग, वृंदा पंचभाई, रीता मंडल, पुर्णेश डडसेना, शशि शर्मा, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका एवं आवरण पृष्ठ

पुनीत मंगल

प्यारे बच्चो,

अप्रैल 2021 का अंक आपके सामने है कहानियाँ, कविताएँ एवं अन्य मजेदार चीजों के साथ. हमें बहुत खुशी है कि आपकी भागीदारी किलोल में बढ़ रही है और बहुत अच्छे प्रयास आपके द्वारा हो रहे हैं. यह क्रम बना रहे ऐसी आशा है.

दोस्तो! आपको पता होगा 18 अप्रैल को विश्व विरासत दिवस मनाया जाता है. इस दिवस को 1983 में यूनेस्को ने मान्यता दी थी. पूरे विश्व में हमारे पूर्वजों की जो अनमोल धरोहरें हैं उन्हें संभालने और सुरक्षित रखने का भाव हमारे मन में जागृत हो इस उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है. अपने आस-पास के ऐतिहासिक, साँस्कृतिक या प्राकृतिक स्थलों की विशेषताओं को जानें समझें और इनके बारे में दूसरों को भी बताएँ.

अप्रैल में विक्रम सम्वत का नया वर्ष 2078 भी आरम्भ हो रहा है. प्रत्येक बर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नव वर्ष प्रारंभ होता है. इसी दिन से चैत्र नवरात्रि का शुभारंभ होता है.

आपको ज्ञात होगा कि कोरोना वायरस का संक्रमण फिर बढ़ने लगा है अतः अपने बचाव के उपायों के प्रति सचेत रहें. अपनी रचनाएँ, अपने अनुभव हमें भेजते रहें इसी आशा के साथ

आपका
आलोक शुक्ला

सद्भाव

रचनाकार-सत्या कौशिक

हे परमपिता परमेश्वर हम पर,
शुभ आशीष बनाए रखना.
मानव सेवा,दया-प्रेम की,
दिल में ज्योत जलाए रखना.

हम विश्व-शांति के हों अग्रदूत,
मन में विश्वास बनाए रखना.
प्राणिमात्र को हो समर्पित,
ऐसे भाव बनाए रखना.

सवेरा

रचनाकार-पुष्पलता साहू

चल रही है ठंडी हवा,
भंवरे भी गुनगुना रहे हैं.
खिल उठी है कलियाँ सारी,
फूल भी मुस्कुरा रहे हैं.

पेड़ों में देखो चहक रही हैं
छोड़कर चिड़िया अपना बसेरा.
गाये भी जा रही हैं देखो,
चरने छोड़कर अपना तबेला.

बीत चुकी है काली रात,
नभ में लालिमा छा रही है.
जाग गया है जग सारा,
तितली फूलों में मंडरा रही है.

चढ़ गया सूरज मुंडेर पर,
मिट गया है अब अंधेरा.
तुम भी उठ जाओ झटपट,
देखो हो गया अब सवेरा.

दूध

रचनाकार-नरेन्द्र सिंह "नीहार"

सेहत भरा खज़ाना दूध.
गैया का नज़राना दूध.

बच्चे पीते, बिल्ली पीती,
पहलवान का खाना दूध.

अंग-अंग में भरता जोश.
ताकत हिम्मत देता रोज़.

दही,छाछ मलाई-मक्खन.
दूध बनाए छप्पन भोग.

गट-गट पीता चतुर सुजान.
गुड़ संग पीते भाईजान.

मेहनत करते हैं जी तोड़,
सो जाते फिर चादर तान.

माँ का दूध समझ वरदान.
गाय भैंस और किसान.

भर-भर बाल्टी दूध से.
आकर ले जाते दीवान.

पीकर दूध बढ़ेगी सूझ.
सुबह शाम लोगों की बूझ.

सब पर भारी सोच तुम्हारी,
पी लो प्यारे मीठा दूध..

पंचतंत्र की कथाएँ-मित्र-द्रोह का परिणाम

एक नगर में दो मित्र धर्मबुद्धि और पापबुद्धि रहते थे. एक दिन पापबुद्धि के मन में विचार आया कि धर्मबुद्धि के साथ दूसरे देश जाकर धनोपार्जन करना चाहिए. बाद में किसी न किसी युक्ति से सारा धन हड़प कर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करूँगा. पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि को धन और ज्ञान प्राप्त होने का लोभ देते हुए अपने साथ दूसरे नगर जाने के लिए मना लिया.

दोनों मित्र एक अन्य नगर के लिए चल पड़े. उस नगर में जाकर दोनों ने व्यापार किया और पर्याप्त धनोपार्जन किया. अंततः प्रसन्न मन से अपने नगर लौट चले.

अपने नगर के निकट पहुँचने पर पापबुद्धि ने धर्मबुद्धि को कहा कि मेरे विचार से नगर मे एक साथ सारा धन ले जाना उचित नहीं है. कुछ लोगों को हमसे ईर्ष्या होने लगेगी, तो कुछ लोग हमसे ऋण के रुप में धन माँगने लगेंगे. संभव है कि कोई इस धन को चुरा ही ले. मेरे विचार से कुछ धन हमें जंगल में ही किसी सुरक्षित स्थान पर छिपा देना चाहिए. इतना सारा धन देखकर तो किसी के भी मन में लोभ आ सकता है.

सीधे-सादे धर्मबुद्धि ने पापबुद्धि के विचार से अपनी सहमति जताई. वहीं एक सुरक्षित स्थान पर दोनों ने गड्ढा खोदकर अपना धन दबा दिया तथा अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान कर गये.

बाद में अवसर देखकर एक रात पापबुद्धि ने वहाँ गड़े सारे धन को चुपके से निकालकर हथिया लिया. कुछ दिनों बाद धर्मबुद्धि ने पापबुद्धि से कहा: भाई मुझे कुछ धन की आवश्यकता है.

अतः चलो साथ चलकर आवश्यकता के अनुसार धन ले आते हैं. पापबुद्धि तैयार हो गया. पर जब धन निकालने के लिए गड्ढ़े को खोदा, तो वहाँ कुछ भी नहीं मिला. पापबुद्धि ने तुरंत रोने-चिल्लाने का अभिनय किया. उसने धर्मबुद्धि पर पहले ही धन निकाल लेने का आरोप लगा दिया. दोनों लड़ने-झगड़ते न्यायाधीश के पास पहुँचे.

न्यायाधीश के सम्मुख दोनों ने अपना-अपना पक्ष प्रस्तुत किया. न्यायाधीश ने सत्य का पता लगाने के लिए दिव्य-परीक्षा का आदेश दिया.

दोनों को बारी-बारी से अपने हाथ जलती हुई आग में डालने थे. पापबुद्धि ने इसका विरोध किया उसने कहा कि वन देवता से वस्तुस्थिति पूछी जाए. न्यायाधीश ने यह सुझाव मान लिया.तय हुआ कि अगले दिन चलकर वनदेवता से घटना का विवरण पूछा जाए.

रात को ही पापबुद्धि ने अपने पिता को एक सूखे हुए वृक्ष के कोटर में बिठा दिया. न्यायाधीश के पूछने पर वृक्ष से उत्तर मिला कि चोरी धर्मबुद्धि ने की है.

तभी धर्मबुद्धि ने वृक्ष के नीचे आग लगा दी. पेड़ जलने लगा और उसके साथ ही पापबुद्धि का पिता भी. थोड़ी देर में ही पापबुद्धि का पिता आग से झुलसा हुआ रोता-चिल्लाता उस वृक्ष में से निकला. उसने वनदेवता की साक्षी का सच्चा भेद प्रकट कर दिया.

न्यायाधीश ने पापबुद्धि को मृत्युदंड दिया और धर्मबुद्धि को उसका पूरा धन दिलवाया.

खिलौना

रचनाकार-ज्योतिमाला सिन्हा

गुड्डे-गुड़िया, हाथी-घोड़ा,
बंदर-भालू, तोता-मैना,
एक से बढ़कर एक है बहना,
आओ तुमको दिखाता हूँ खिलौना.

ये देखो हाथी की शान,
लंबी सूंड, बड़े हैं कान,
घोड़ा अपना दमदार है,
दौड़ता तेज रफ़्तार है.

बंदर की है बात निराली
नकल करता सबकी,
बात-बात पर बजाता ताली.

वो देखो पीछे बैठी मैना,
सोच रही अब किधर है उड़ना.

हरे तोते की है चोंच लाल,
मिट्ठू-मिट्ठू करता रट्टूलाल.
भालू भी है खूब मतवाला,
भारी भरकम शरीर वाला.

अब बारी है खरगोश का,
छोटा सा है, सफ़ेद रंग जिसका.
गाजर यह खाता है,
बहुत तेज़ भागता है.

मगर, हिरण सब देख रहे थे,
मेरा नंबर कब आएगा,
ये सोच रहे थे.
जब तक गुड्डे-गुड़िया,
भी सज गए,
खिलौने देखकर,
बच्चे बहुत खुश हुए.
खिलौने देखकर,
बच्चे बहुत खुश हुए.

बाबा रविदास

रचनाकार-सीमान्चल त्रिपाठी

हे लोक हितकारी, करूणा के सागर.
भरते रहिए दीन, दुखियों की गागर..

हर्षित वृष्टि करते रहिए, हे अलौकिक दृष्टा संत.
दया की तुम प्रतिमूर्ति, करो महिमा अनंत.

करते थे वे सदा सर्वदा, लाल कर्म से कमाल.
कर्त्तव्यनिष्ठा से पूरित, भारत भूमि हुई निहाल..

आपने देकर जन संदेश, मन चंगा तो कठौती में गंगा.
बहाए अद्‌वितीय प्रेम धारा, बने निराली निर्मल गंगा..

भक्ति भाव से तेरे चरणों में, शीश झुकाते नित्य हम.
देंगे बाबा रविदास हमें, हर काम करने का दम..

परित्याक्त कर अहम् का, करते श्रद्‌धासुमन अर्पित.
लें बाबा का हम आशीर्वाद, झूम उठते होकर गर्वित..

बंदर मामा

रचनाकार-आशा उमेश पांडेय

बंदर मामा बड़े सयाने,
उनके हैं हजार ठिकाने,
बच्चे जब उन्हें सताते,
मामा उन्हें लपक भगाते.

झुंड बनाकर चलते मामा,
जंगल-जंगल फिरते मामा,
सब देख-देख खुश होते हैं,
बंदर मामा बच्चे कहते हैं.

पेड़ों पर रहता मामा का डेरा,
डाल-डाल पर उनका है फेरा.
कंद-मूल फल-फूल वो खाते,
बड़े मजे से हैं जीवन जीते.

गाँव में जब सजता मेला,
मदारी दिखाता उनका खेला.
बच्चे-बूढ़े सबका लगता रेला,
बंदर मामा खाते केला.

हमारे पौराणिक पात्र-महर्षि पतंजलि

पतंजलि एक प्रख्यात चिकित्सक और रसायन शास्त्र के आचार्य थे. रसायन विज्ञान के क्षेत्र में अभ्रक, धातुयोग और लौहशास्त्र का परिचय कराने का श्रेय पतंजलि को जाता है. राजा भोज ने महर्षि पतंजलि को तन के साथ ही मन के चिकित्सक की उपाधि से विभूषित किया था. इनको आयुर्वैदिक ग्रन्थ चरक संहिता का जनक माना जाता है.

पतंजलि को योगशास्त्र के जन्मदाता की उपाधि भी दी जाती है,जो हिन्दू धर्म के छह दर्शनों में से एक है. इन्होंने योग के 195 सूत्रों को स्थापित किया. जो योग दर्शन के आधार स्तंभ हैं. इन सूत्रों को पढ़ने की क्रिया को भाष्य कहा जाता है. महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग की महत्ता का प्रतिपादन किया है. जिसका जीवन को स्वस्थ रखने में विशेष महत्त्व है. योग के इन आठ अंगों के नाम इस प्रकार हैं - यम,नियम,आसन,प्राणायाम,ध्यान, धारणा,प्रत्याहार और समाधि.

इनमें से वर्तमान में केवल आसन, प्राणायाम औए ध्यान ही अधिक प्रचलन में हैं. पतंजलि के प्रयासों के कारण ही योगशास्त्र किसी एक धर्म का न होकर सभी धर्म और जाति के शास्त्र के रूप में प्रचलित है.

पतंजलि द्वारा रचित ग्रन्थ: भारतीय दर्शन शास्त्र की धरोहर में पतंजलि के तीन ग्रंथों का वर्णन मिलता है. जिनके नाम हैं - योगसूत्र, आयुर्वेद पर ग्रन्थ एवं अष्टाध्यायी पर भाष्य.

पतंजलि ने पाणिनि द्वारा रचित अष्टाध्यायी पर टीका लिखी जिसे महाभाष्य के नाम से जाना जाता है. महाभाष्य व्याकरण का ग्रन्थ है, जिसे वर्तमान समाज का विश्वकोश भी कहा जाता है. महाभाष्य द्वारा व्याकरण की जटिलता के रहस्यों को सुलझाने में मदद मिलती है. इस ग्रन्थ के माध्यम से शब्द की व्यापकता पर प्रकाश डालकर महर्षि पतंजलि ने 'स्फोटवाद नामक एक नवीन सिद्धांत का प्रतिपादन किया है.

योगसूत्र की रचना महर्षि पतंजलि ने आज से लगभग 200 ई. पूर्व की थी. इस ग्रन्थ का अनुवाद विभिन्न देशी एवं विदेशी भाषाओं में किया जा चुका है. भारतीय साहित्य की देन योगशास्त्र आज फिर लोकप्रियता के चरम पर है. आज इसका प्रचलन शरीर को स्वस्थ रखने के साथ ही मानसिक शांति के लिए किया जा रहा है.

महर्षि पतंजलि द्वारा प्रतिपादित योग आज न सिर्फ़ भारत बल्कि पूरे विश्व को स्वस्थ जीवन शैली का पाठ पढ़ा रहा है. पूरा संसार उनके इस योगदान का ऋणी रहेगा.

धरती माता

रचनाकार-अनिता चन्द्राकर

यह धरती जीवनदायिनी, कहलाती हम सबकी माता.
नदियाँ प्यास बुझातीं सबकी, कृषक है फसल उगाता.
विपुल खनिजों का भंडार यही, जीव भी आश्रय पाता.
ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर यहीं, सुंदर उपवन मन लुभाता.
धरती माता कर रही पुकार, संकट से मुझे उबार लो.
हुआ रूप विकृत मेरा अतिदोहन से, पुनः मुझे सँवार लो.
है बहुत बातें करने वाले, अब कुछ कोशिश भी कर लो.
सब मिल छोटे-छोटे प्रयासों से, धरती माता को बचा लो.

मेरी दीदी

रचनाकार-खेमराज साहू

मेरी दीदी प्यारी-प्यारी है, हम सब की राज दुलारी है.
भाई-बहन का अनोखा प्रेम, ये सारे दुनिया से न्यारी है.
दिनभर मुझसे लड़ती है, माँ जब मिठाई देती है.
वो तब बाँटकर मुझसे खाती है, माँ मुझे डाँट लगाती है.
मुझसे पहले रो देती है, मेरी दीदी प्यारी-प्यारी है.

मेरी दीदी बड़ी भोली भाली है, बस अपने में ही मतवाली है.
हम दोनों भाई बहन एक हैं, माता-पिता की संतान हैं.
अनोखा है दीदी का प्यार, दीदी मेरी महान है.
मेरे लिए सब कुछ, करने को तैयार रहती है.
स्कूल जब हम जाते हैं, हम दोनों का बस्ता ले लेती है.
मेरे लिए सबसे लड़ लेती है, मेरी दीदी प्यारी-प्यारी है.

ज्ञान की पाती-विश्व धरोहर दिवस

रचनाकार-चानी ऐरी

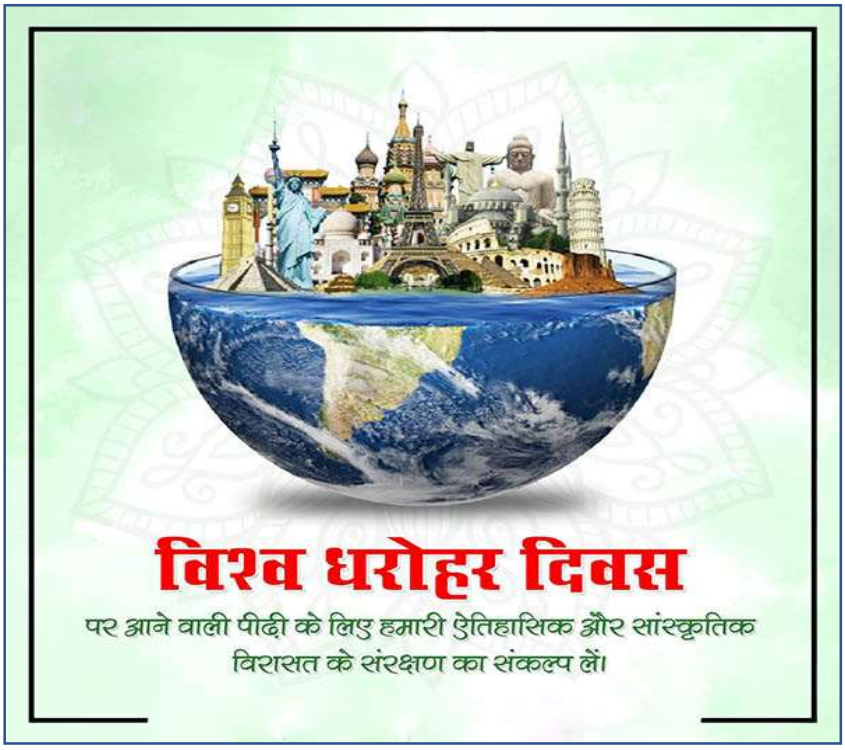

विश्व धरोहर दिवस अथवा विश्व विरासत दिवस, प्रतिवर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है. इस दिवस का मुख्य उद्देश्य यह है कि पूरे विश्व में मानव सभ्यता से जुड़े ऐतिहासिक और साँस्कृतिक स्थलों के संरक्षण के प्रति जागरूकता लाई जा सके. यह दिन बताता है कि हमारी इन धरोहरों को अब कितने रखरखाव की जरूरत है. विरासतों को सुरक्षित रखने के लिए जागरुकता क्यों जरूरी है? आओ जानते हैं..

विश्व धरोहर स्थल क्या होता है?

विश्व धरोहर या विरासत साँस्कृतिक महत्व और प्राकृतिक महत्व के स्थल होते हैं. यह स्थल ऐतिहासिक और पर्यावरण के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण होते हैं. इन स्थलों का अंतरराष्ट्रीय महत्व होता है और इन्हें बचाए रखने के लिए विशेष उपाय किए जाने की जरूरत होती है. ऐसे स्थलों को आधिकारिक तौर पर संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को विश्व धरोहर की मान्यता प्रदान करती है. कोई भी स्थल जिसके लिए यूनेस्को समझता है कि वह मानवता के लिए जरूरी है, वहाँ का साँस्कृतिक और भौतिक महत्व है, उसे विश्व धरोहर के रूप में मान्यता दी जाती है.

वर्ल्ड हेरिटेज डे की शुरुआत

संरक्षित स्थलों पर जागरूकता के लिए साँस्कृतिक-ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक विरासतों की विविधता की रक्षा के लिए 18 अप्रैल को वर्ल्ड हेरिटेज डे मनाने की शुरुआत हुई. ट्यूनीशिया में इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ माउंटेन्स एण्ड साइट द्वारा आयोजित एक संगोष्ठी में 18 अप्रैल,1982 को विश्व धरोहर दिवस मनाने का सुझाव दिया गया, जिसे कार्यकारी समिति द्वारा मान लिया गया. नवंबर,1983 में यूनेस्को सम्मेलन के 22वें सत्र में हर साल 18 अप्रैल को वर्ल्ड हेरिटेज डे मनाने का प्रस्ताव पारित किया गया.

कैसे होता है धरोहर संरक्षण का कार्य?

किसी भी धरोहर को संरक्षित करने के लिए दो संगठनों अंतरराष्ट्रीय स्मारक एवं स्थल परिषद और विश्व संरक्षण संघ द्वारा आकलन किया जाता है. फिर विश्व धरोहर समिति से अनुशंसा की जाती है. समिति की वर्ष में एक बार बैठक होती है और यह निर्णय लेती है कि किसी नामांकित संपदा को विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित करना है या नहीं. विश्व विरासत स्थल समिति चयनित खास स्थानों, जैसे-वन क्षेत्र, पर्वत, झील, मरुस्थल, स्मारक, भवन या शहर इत्यादि की देख-रेख यूनेस्को के तत्वावधान में करती है. अंतराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ के 1968 के प्रस्ताव पर 1972 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानवीय पर्यावरण पर स्टॉकहोम, स्वीडन में सम्मेलन पर बनी सहमति के बाद विश्व की प्राकृतिक और साँस्कृतिक धरोहरों पर सम्मेलन को यूनेस्को की सामान्य सभा ने 16 नवंबर, 1972 को स्वीकृति दे दी. वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी की मीटिंग की शुरुआत जून,1977 में हुई. वर्ष 2013 तक पूरी दुनिया में 981 स्थलों को विश्व विरासत स्थल घोषित किया जा चुका है, जिसमें 759 साँस्कृतिक, 29 मिले-जुले और 160 अन्य स्थल हैं.

खतरे में धरोहर

यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी ने 44 धरोहरों को खतरे की सूची में रखा है. इनमें प्रमुख तौर पर अफगानिस्तान की बामियान वैली, इजिप्ट का अबू मेना, यरूशलम शहर एवं दीवार, डोमेस्टिक रिपब्लिक ऑफ द कांगो की पाँच धरोहरें, सीरियन अरब रिपब्लिक की छह धरोहरें एवं कई देशों के नेशनल पार्क एवं संरक्षित स्थल शामिल हैं.

नई धरोहरें

यूनेस्को की वर्ल्ड हेरिटेज कमेटी ने बीते समय में विभिन्न देशों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक और मिश्रित 20 धरोहरों को हेरिटेज सूची में शामिल किया है. इस सूची में भारत के राजस्थान के हिल फोर्ट को भी जगह मिली है.

भारत में कितने विश्व धरोहर स्थल? भारत में फिलहाल 27 साँस्कृतिक, 7 प्राकृतिक और 1 मिश्रित सहित कुल 35 विश्व धरोहर स्थल हैं. यूनेस्को ने भी भारत के 26 स्थलों को विश्व धरोहर घोषित किया है.

सांस्कृतिक धरोहर स्थल

अजंता की गुफाएँ(1983) आगरा का किला(1983), एलोरा की गुफाएँ(1983), ताज महल(1983), महाबलीपुरम के स्मारक(1984), कोणार्क सूर्य मंदिर(1984), गोवा के चर्च(1986), फतेहपुर सीकरी(1986), हम्पी के स्मारक(1986), खजुराहो के मंदिर(1986), एलीफेंटा की गुफाएँ(1987), महान चोल मंदिर समूह(1987/2004), पट्टाकल के स्मारक(1987), सांची का स्तूप(1989), हुमायूं का मक़बरा(1993), कुतुब मीनार(1993), महाबोधि मंदिर(2002), भीमबेटका गुफ़ाएं(2003),चंपानेर-पावागढ़ पार्क(2004), छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस(2004), लाल किला(2007), जंतर-मंतर(2010), राजस्थान के पहाड़ी किले(2013), रानी की वाव(2014), नालंदा(2016), अहमदाबाद(2017), जयपुर(2019) शामिल है.

हमे इन पुरातात्विक महत्व के स्मारको को बचाए रखना बहुत आवश्यक है. यह दिवस एक अवसर है जब हम लोगों को बताएँ कि हमारी ऐतिहासिक और प्राकृतिक धरोहरों को आने वाली पीढ़ियों के लिए बचाए रखने के लिए कितने प्रयास हो रहे हैं.

आया बसंत

रचनाकार-वसुंधरा कुर्रे

आया बसंत देखो, आया बसंत.
खुशनुमा है वन उपवन.
देखो आया बसंत देखो आया बसंत.
आम बैराएं मैदानो में,
खेत खलिहान में
पीले सरसों लहराए.
रंग-बिरंगे खिले बगिया,
खिले पलाश और सेमल.
उपवन देखो रंग बिरंगी,
नारंगी छटा छा गई.
भीनी-भीनी खुशबू सबको भाग गई.
आया बसंत देखो, आया बसंत.
खुशनुमा है वन उपवन.
खुशनुमा है वन उपवन.
फूलों पर मंडराएं भंवरे,
भौरो की मधुर गुंजन से गूंजे उपवन.
कोयल कुहूक मधुर तान छेड़े.
पपीहा पीहू-पीहू बोले

आया बसंत देखो, आया बसंत
खुशनुमा है वन उपवन.
खुशनुमा है वन उपवन.
बसंत का बहार देखो,
युवाओं में उत्साह देखो,
बसंत में फुहार देखो,
खिल गया है अंतर्मन .
आया बसंत देखो, आया बसंत.
खुशनुमा है वन उपवन.
खुशनुमा है वन उपवन.

गुड़िया रानी

रचनाकार-डॉ. सतीश चन्द्र भगत

जल्दी जागो गुड़िया रानी,
क्यों करती हो आनाकानी.

बड़-बड़ करती किसे पढ़ाती,
अटर-पटर कुछ समझ न आती.

गुड्डा राजा दौड़कर आया,
ढ़म-ढ़म, ढ़म-ढ़म ढ़ोल बजाया.

उठो-उठो ओ गुड़िया रानी,
क्यों करती हो तुम मनमानी.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी -

टीचर जी! मुझे भी देखिए

मम्मी मैं कल स्कूल नहीं जाऊँगी. प्रिया ने अपनी मम्मी से कहा. अरे, क्यों? तुम तो कभी स्कूल नहीं छोड़तीं. फिर क्या हुआ? मम्मी ने पूछा.

बस ऐसे ही. मेरा मन नहीं है. प्रिया बोली.

चलो ठीक है. लेकिन कोई समस्या हो तो बताओ. क्या तुमने अपना होमवर्क नहीं किया है? मम्मी ने प्रश्न किया.

होमवर्क कुछ था ही नहीं. तो क्या करती?

प्रिया के स्वर में कुछ चिढ़ झलक रही थी.

अच्छा चलो ठीक है. एक दिन की छुट्टी अपने मन से मना लो. मम्मी ने अपनी सहमति दे दी.

अगले दिन प्रिया स्कूल नहीं गई. दिनभर इधर-उधर अपना समय बिताती रही. वैसे प्रिया कभी भी स्कूल नहीं छोड़ती थी,कभी बीमार हो तो बात अलग है. पढ़ाई में उसकी रुचि थी. पाठ्यक्रम के अलावा भी किताबें पढ़ना उसे अच्छा लगता था. पर आज न जाने क्यों वह स्कूल नहीं गई. मम्मी को भी आश्चर्य हो रहा था.

शाम को मम्मी ने प्रिया से पूछा कि अगले दिन के लिए अपना स्कूल बैग तैयार कर लिया है या नहीं?

हाँ कर लिया है. प्रिया ने अनमने स्वर में उत्तर दिया.

मम्मी को लगा कि प्रिया का कल भी स्कूल जाने का मन नहीं है. जरूर कोई समस्या है. उन्होंने प्रिया से पूछा कि आखिर क्यों वह स्कूल नहीं जाना चाहती है?

अब प्रिया ने बताया कि स्कूल में आजकल उसका मन नहीं लगता है. शिक्षक अपना पूरा समय उन बच्चों को देते हैं जो पढ़ाई में कमजोर हैं. अर्धवार्षिक परीक्षा होने वाली है. मैं तो अपनी तैयारी पूरी कर चुकी हूँ, अब शिक्षक मुझसे कुछ पूछते भी नहीं हैं. मैं दिनभर स्कूल में खाली बैठी रहती हूँ, इससे मुझे बहुत बोरियत होती है.

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम निचे प्रदर्शित कर रहे हैं.

शालिनी पंकज दुबे द्वारा पूरी की गई कहानी

प्रिया की बात सुनकर उसकी मम्मी ने उसे कुछ समझाया! मम्मी की बात सुनकर प्रिया खुश होकर स्कूल के लिए निकली. हालाँकि खुश होने के बावजूद उसके मन में कुछ प्रश्न भी उठ रहे थे. कंधे पर बैग लटकाए स्कूल के गेट पर पहुँचते तक उसका उत्साह फीका पड़ने लगा. वो सोच रही थी कि 'मम्मी को क्या पता स्कूल के बारे में?' कहीं मम्मी ने कहा वही सच हुआ तो?? तो, तो

"प्रिया"

जी टीचर जी!

"कल तुम क्यों नही आई थीं, क्या हुआ ?तबियत ठीक नही क्या?"

ये कहते हुए टीचर जी ने उसके माथे को स्पर्श किया व अंदर ले गयी.

इधर प्रिया की आँखों से टप-टप आँसु टपकने लगे. प्रिया ने मन ही मन सोचा कि अब उसे वही करना है जो उसकी मम्मी ने कहा है.

प्रिया जब घर लौटी तो मम्मी से जा लिपटी.

"मम्मा! आप ने बिल्कुल सही कहा! टीचर जी ने मेरे नही आने का कारण पूछा, उन्हें मेरी फिक्र है उनकी आँखों में मैंने देखा."

"हम्म!"

और मैंने दूसरो की मदद की, जो मुझे याद था वो पाठ मैंने उनके सामने दोहराया जिनकी अर्धवार्षिक परीक्षा की तैयारी नही हुई थी. फिर कुछ को गणित के प्रश्नों को हल करने में मदद की,, मुझे बहुत मजा आया और,,,और टीचर जी मुस्कुरा कर मेरे पास आई और उन्होंने बड़े प्यार से मेरे सर पर हाथ फेरा! ओह मम्मी आप ने तो सब ठीक कर दिया. जैसा आपने कहा,वैसा ही मैंने किया,अब तो कारण बताइये??

प्रिया की मम्मी ने एक कहानी के माध्यम से बताया कि जैसे माँ अपने सभी बच्चों को समान रूप से प्यार करती है उसी तरह शिक्षक भी. माँ का ध्यान हमेशा उस बच्चे की तरफ ज्यादा होता है जो छोटा हो या जिसे उसकी ज्यादा जरूरत होती है.

संतोष कुमार कौशिक द्वारा पूरी की गई कहानी

मम्मी प्रिया को समझा रही थीं कि शिक्षकों की भी समस्या है. सभी बच्चे पढ़ाई गई बातों को समझें,कोई भी बच्चा कमजोर ना हो. उसी समय फोन की घंटी बजी. प्रिया के शिक्षक ने चिंतित होकर फोन किया था कि कभी स्कूल नहीं छोड़ने वाली प्रिया स्कूल क्यों नहीं आ रही है ? कहीं बीमार तो नहीं है ? मम्मी ने शिक्षक को प्रिया के स्कूल नहीं जाने का कारण बताया. शिक्षक ने प्रिया से बात की और कहा कि बेटा तुम कल से स्कूल आओ तुम्हें स्कूल में बोरियत महसूस नहीं होगी. ना ही कोई शिकायत का मौका मिलेगा. समझाने पर कर प्रिया स्कूल आने के लिए मान गई.

अगले दिन प्रिया खुश होकर स्कूल गई. शिक्षक ने अपनी कक्षा के बच्चों को ग्रुप में विभाजित किया. हर ग्रुप में कमजोर बच्चों के साथ एक होशियार बच्चे को टीम लीडर बनाकर शिक्षण कार्य कराया. सभी ग्रुप को अलग-अलग कार्य दिया गया, सभी बच्चों ने अपने ग्रुप के साथ कार्य करने के पश्चात ग्रुप में किए हुए कार्यों को कक्षा में खुशी से प्रदर्शित किया. सभी बच्चे पूरे दिन एक दूसरे से सीखते हुए पढ़ाई में व्यस्त रहे. बच्चों द्वारा ग्रुप में किए हुए प्रदर्शन कार्यों को देख कर शिक्षक भी प्रसन्न हुए.

अब प्रतिदिन शिक्षक कभी खेल खिलाकर, कभी गीत कविता, कभी चित्रकारी करके तो कभी बाल सभा के माध्यम से आदि अलग-अलग विधियों का प्रयोग करके बच्चों को शैक्षणिक कार्य में व्यस्त रखने लगे हैं.अब होशियार बच्चे भी अपने साथी बच्चों को सिखाकर खुश होते हैं. अब किसी बच्चे को कोई शिकायत नहीं रही.

सभी बच्चों ने पूरी तैयारी के साथ अर्धवार्षिक परीक्षा दी. सभी बच्चों को अच्छे अंक प्राप्त हुए.

टेकराम ध्रुव 'दिनेश' द्वारा पूरी की गई कहानी

प्रिया की बातें सुनकर मम्मी सोचने लगीं कि यह इसी तरह स्कूल में बोरियत महसूस करती रही और स्कूल जाने से मना करती रही तो इसकी पढाई पर विपरीत प्रभाव हो सकता है. उसने परीक्षा की तैयारी पूरी कर ली है लेकिन घर पर रहकर वह पढ़ाई भी नहीं करेगी है, इधर-उधर समय बिताएगी. इसके लिए कुछ करना पड़ेगा.

अगले दिन मम्मी ने स्कूल जाकर प्रिया के टीचर से मुलाकात की और उन्हें प्रिया की समस्या के विषय में बताया.टीचर ने कहा-प्रिया तो पढ़ाई में अच्छी है, उसे ज्यादा समझाने की जरूरत ही नहीं पड़ती, इसलिए मैं उन बच्चो पर ज्यादा ध्यान दे रहा हूँ जो पढ़ाई में कमजोर हैं.

मम्मी ने कहा-टीचर जी, आप कमजोर बच्चों की तरफ ध्यान दे रहे हैं वो तो ठीक है लेकिन इसके चलते आपने प्रिया की तरफ से ध्यान हटा लिया है, इसलिए वह स्कूल में बोरियत महसूस करती है और उसका मन स्कूल में नहीं लग रहा है. आप कुछ उपाय सोचिए जिससे उसका मन स्कूल में लगा रहे.

टीचर ने कहा-ठीक कहा आपने, उसे स्कूल भेजिए हम उसकी बोरियत दूर करने का उपाय करेंगे.

अगले दिन प्रिया स्कूल गई.

टीचर ने कहा-आज हम कुछ सवाल हल करेंगे. फिर प्रिया की तरफ देखकर बोले क्या तुम इन सवालों को हल कर सकती हो

प्रिया? प्रिया के हाँ कहने पर टीचर ने कहा-बच्चो! आज प्रिया तुम लोगों को इन सवालों का हल समझाएगी, तब तक मैं दूसरे काम कर लेता हूँ

प्रिया ने अपने साथियों को एक-एक सवाल हल कर समझाए. जो बच्चे टीचर से प्रश्न पूछने से हिचकिचाते थे वे बेझिझक प्रिया से सब कुछ पूछ पा रहे थे. अब प्रिया को बोरियत महसूस नहीं हो रही थी क्योंकि उसकी बोरियत का इलाज हो चुका था.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

आकाश और क्रिकेट

छठी कक्षा का छात्र आकाश क्रिकेट का अच्छा खिलाडी है. आसपास कहीं भी कोई मैच हो और आकाश वहाँ न हो ऐसा नहीं होता है. और जिस दिन टीवी पर कोई क्रिकेट मैच आ रहा हो उस दिन तो वह मैच के शुरू होने से लेकर समाप्त होने तक टीवी के सामने से हिलता तक नहीं. सारा ध्यान क्रिकेट पर होने के कारण पढ़ाई में आकाश पिछडता जा रहा है. इसबार के पालक बालक सम्मेलन में जब शिक्षक ने आकाश के माँ पिताजी को आकाश के पढाई में पिछड़ने की बात बताई तो वे दोनों चिंतित हो गये. रात को खाने के बाद पिताजी ने आकाश से उसकी पढ़ाई के बारे में पूछा तो आकाश ने उत्तर दिया कि वह तो क्रिकेटर बनेगा और पढ़ाई में उसकी क़ोई ज्यादा रुचि नहीं है. पिताजी ने आकाश को समझाने की कोशिश की और कहा कि पढ़ाई भी तो जरूरी है. आकाश का उत्तर था कि आजकल तो सभी कहते हैं कि जीवन में वही करना चाहिए जिसमें रुचि हो. अगर मेरी रुचि क्रिकेट में है तो मैं अपना पूरा ध्यान क्रिकेट पर ही क्यों न लगाऊँ? क्रिकेटर बनने के लिए पढ़ाई करने की क्या जरूरत है? उसके लिए तो खेल का अभ्यास ही करना होगा.

अब इसके आगे आप अपनी कल्पना से इस कहानी को पूरा कीजिए और हमें माह की 15 तारीख तक ई मेल **kilolmagazine@gmail.com** पर भेज दें. आपके द्वारा पूरी की गई कहानियों में से चुनी गयी श्रेष्ठ कहानी किलोल के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी.

मीठा चार

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

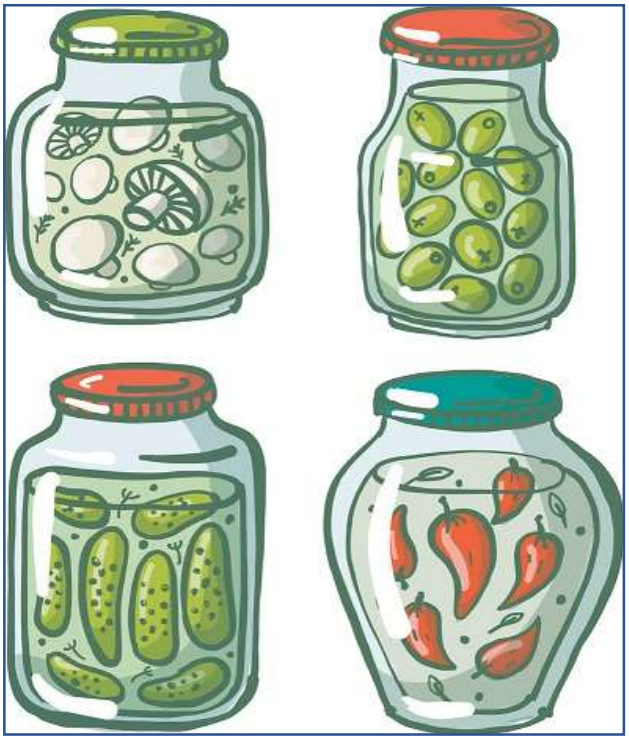

जंगल ले लावौ मीठा चार
झन बेंचव जी हाट-बाजार.

खावौ भइया येला मन भर
पोसकता हे येमा तन बर.

येमा प्रोटीन हे भरपूर
कमजोरी ला करथे दूर.

तस्मई मा डारौ चिरौंजी
बइठ के खावौ भइया भौजी.

संगी-साथी ला समझाना
विटामिन के हरे खजाना.

पहेलियाँ

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला"

1. एक छोटे कद का जानवर,
कहते कम अक्ल का.
पर होता मेहनतकश,
घोड़े का हमशक्ल का.

2. वर्गाकार खेत में होते,
बीस कुशल मजदूर.
खेत के हर कोने में,
होते कुएँ दूर-दूर.

3. नीले सीलिंग पर,
दिन भर एक पंखा चलता.
और रात होते ही,
फिर पंखा बदलता.

4. हल चलता जाए.
बीज पड़ता जाए.
फसल उगती जाए.
क्यारी बनती जाए.

5. तीन अक्षरों का नाम,
उल्टा-सीधा एक समान.
नदी-ताल की आन,
राष्ट्र की है एक शान.

उत्तर:- 1.गधा, 2. कैरम बोर्ड, 3. आसमान, 4. पेन, 5. जलज

The Primary Education

Writer-Tikeshwar Sinha "Gabdiwala"

Today there a bus was standing in the Balod bus stop. Mr Arjun Sahuji the retired teacher was sitting in the bus. He was going to Dhamtari. After a long time, he was coming in the Balod city, so wondering to see the shining of city. He felt that really Chhattisgarh had done very progress. He was so happy. Then the bus was moved from the bus stop.

A half hour later the bus stopped. A young man with his friend boarded the bus. He saw his teacher Mr Arjun Sahuji who had taught him in the primary school. He thought that his teacher would not recognize him after such a long time ; so, he paid no attention to his teacher. He sat in his teacher's side. After a moment he took the gutka out of his pocket and started chewing joyfully. Then suddenly Arjun Sahu also saw the young man and recognized him that he was an ex-student of him. But he understood proper to keep quiet at that time.

The bus moved. The young man was busy in talking with his friend on flop matter and began again and again spiting through the window. Mr Arjun Sahuji being got interruption; but spoke no word to the young man. He was silent. Then the bus reached Dhamtari. He said the young man-'Mohit, side me a little. I shall get the bus off here. Seeing his teacher, the young man was thinking of his teacher's remembering power only ; but Mr Arjun Sahuji was busy in considering of his education given by him as primary education to the young man.

चिड़िया रानी

रचनाकार-अरुण कुमार यादव

आओ बच्चो सुनो कहानी,
एक है प्यारी चिड़िया रानी,

चूँ-चूँ कर मुझसे बतियाए,
फुदक-फुदक वो नाच दिखाए,
जब भी बैठूँ खाना खाने,
साथ में मेरे खाना खाए.

दो-चार रोज को जाऊँ बाहर
परेशान हो मुझे बुलाए..
लौट के आऊँ जब घर को
झट से कंधे पर चढ़ जाए..

बस मैं कहूँ यही कहानी,
वो है मेरी नन्ही रानी..

आलसी राम

रचनाकार-रीना मौर्य मुस्कान

बहुत सोते हैं आलसी राम,
कुछ भी ये करते नहीं काम,
सारा दिन बस खाते रहते,
दिन-पर दिन तोंद है बढ़ते,
कितना सबने समझाया इनको,
फिर भी अक्ल ना आई इनको,
बीमारी का जब हो गए घर,
तब लगा फिर इनको डर,
योग-व्यायाम अब इनको भाए,
स्वस्थ शरीर निरोगी काया
बात समझ में आए.

प्यारा श्यामु

रचनाकार-अल्का राठौर

छः वर्षीय श्यामू के परिवार में दादा-दादी, ताउ-ताई, मम्मी-पापा, चाचा-चाची और एक बड़ी दीदी है!

एक रात श्यामु अपने कमरे में अकेले सोया हुआ था,तभी अचानक बिजली बन्द हो गयी! श्यामु को खिड़की के बाहर चाँद की हल्की रोशनी में कुछ लटकता सा दिखा, वह उस लटकती हुई चीज को साँप समझकर डर गया!

उसने दादा-दादी को आवाज लगाई, पर उन्हें सुनाई नहीं दिया! ताउ-ताई को पुकारा, वो भी नहीं आये! मम्मी-पापा को बुलाया, वो भी नहीं आए! अब उसने अपनी बड़ी दीदी को आवाज दी, दीदी श्यामु की आवाज़ सुनकर आई और पूछा क्या हुआ? श्यामु डरते हुए बोला दीदी वहाँ साँप है, मुझे बहुत डर लग रहा है! दीदी ने उसे समझाया किसी भी चीज को अच्छे से देखे-परखे बिना डरना नहीं चाहिए!

तभी बिजली आ गयी, श्यामु और दीदी ने देखा कि खिड़की पर लटकने वाली चीज साँप नहीं बल्कि रस्सी का टुकडा थी. श्यामु का डर खत्म हो गया.

सीखना सिखायेंगे

रचनाकार-प्रतिभा त्रिपाठी

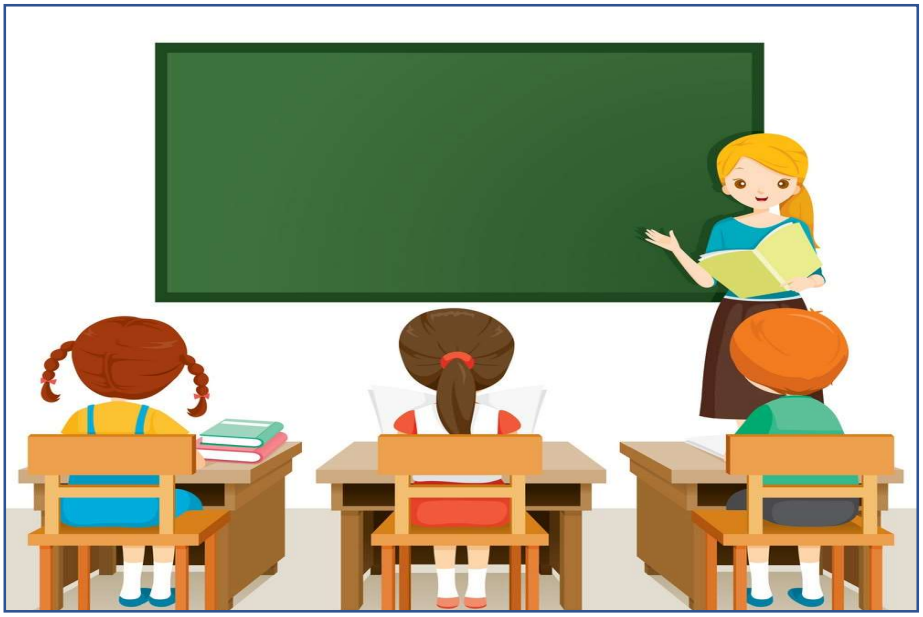

अंगना म शिक्षा से सीखना सिखायेंगे.,..
स्व प्रेरित महिला शिक्षिका की सोच को बढायेंगे...
अक्षर, ज्ञान, गतिविधियों से बच्चों को सिखायेंगे
अंगना म शिक्षा में सीखना सिखायेंगे...

माता उन्मुखीकरण से माताओं को बतायेगे..
गिनती, संख्या, चार्ट से जोड़ने को सिखायेंगे...
अंगना म शिक्षा में सीखना सिखायेंगे
माताओं को प्रेरित कर, बच्चों को सिखायेंगे

स्व प्रेरित महिला शिक्षिका की सोच को बढायेंगे..
वर्गीकरण कर कर के, छोटा-बडा बतायेगे..
अंगना म शिक्षा से सिखना सिखायेंगे
स्व प्रेरित महिला शिक्षिका की सोच को बढायेंगे

घने काले बादल से पानी को गिरायेगें..
अंगना म शिक्षा से बच्चों को सिखायेंगे..

माटी-तिलक लगाथे

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

सुरुज के पहिली किरन मन
जुरिया के जब आथे
तभे चिरइया गीत सुघर
चीं-चीं, चूँ-चूँ गाथे.

सुग्घर चलथे पुरवाही
रुख मन मुड़ डोलाथे
बड़े फजर उठ के कुकरा
कुकरुँस कूँ चिल्लाथे.

तभे बबा हर उठ संगी
राम भजन ला गाथे
अउ दाई उठो कही के
सब झन ला खिसयाथे.

ददा ह जाथे खेत डहर
भुई ल माँथ नवाथे
गार पसीना करथे अरघ
माटी तिलक लगाथे.

हमारा शरीर

रचनाकार-श्वेता तिवारी

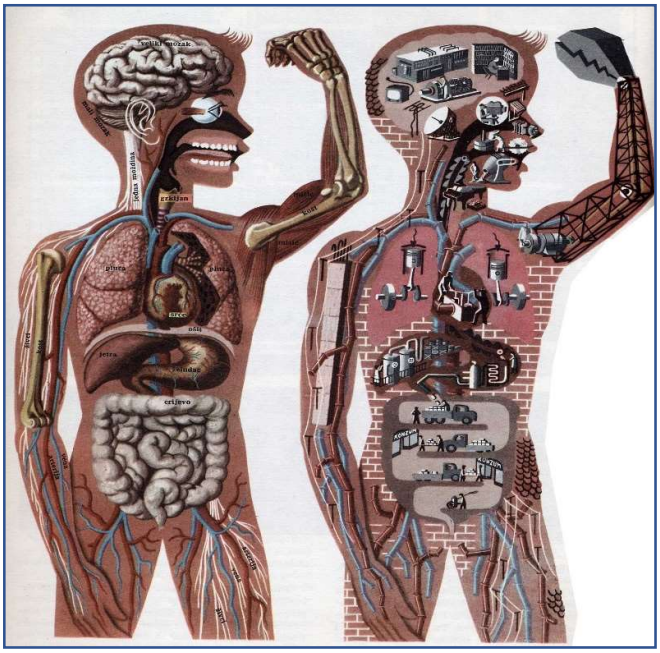

हमारा शरीर एक अद्भुत मशीन है इसका हर अंग अनमोल है. शरीर के अंग मिलजुल कर सारा काम करते हैं. मशीन में अगर कोई कलपुर्जा खराब हो जाता है तो उसे बदलकर नए पुर्जे लगा सकते हैं परंतु हमारे शरीर का कोई अंग.यदि खराब हो जाए तो उसे ठीक करने में बहुत मुश्किल हो सकती है हालांकि छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखने और कुछ सावधानियाँ बरतने से स्वयं ठीक हो जाते हैं. हम अपने सारे काम इस शरीर के द्वारा ही करते हैं. इसका प्रत्येक भाग एक विशेष कार्य करता है और सारे अंग मिलकर सभी काम करते हैं जैसे आँखों से हम देख सकते हैं, हाथों से काम करते हैं, पैरों से चलकर हम जहाँ चाहें जा सकते हैं, कानों से सुनते हैं तो नाक से सूँघने का काम करते हैं, मुँह से बोलते हैं.

शरीर को चलाने के लिए भोजन भी मुँह से ही करते हैं. अगर इनमें से कोई अंग बेकार हो जाए तो जीवन में बहुत कठिनाइयाँ आ जाती हैं. शरीर को स्वस्थ व सुंदर रखने के लिए उसकी देखभाल करनी चाहिए जैसे किसी मशीन को चलाने के लिए पेट्रोल और डीजल की जरूरत होती है वैसे ही शरीर को चलाने के लिए अच्छा संतुलित भोजन, सफाई का ध्यान रखना और व्यायाम करना बहुत जरूरी है. भोजन सादा और ठीक समय पर नियमित रूप से करना चाहिए. अधिक चटपटा मिर्च मसाले वाला भोजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है. भोजन में दूध दही फल हरी व ताजा सब्जियाँ लेनी चाहिए. सुबह जल्दी उठना और व्यायाम करना बहुत लाभदायक होता है. जो बच्चे जल्दी सोते हैं और सुबह जल्दी उठते हैं उनकी सेहत हमेशा

अच्छी रहती है. अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर की सफाई बहुत जरूरी है इसके लिए प्रतिदिन साफ पानी से नहाना चाहिए आँख, कान, नाक आदि अंगों को साफ रखना चाहिए दाँतों की सफाई के लिए सुबह उठकर और रात में सोने से पहले ब्रश करना चाहिए, नाखून कटे हों, बालों की सफाई करनी चाहिए, बाल धुले हुए होने चाहिए नहीं तो बीमारियाँ होती हैं. शरीर की सफाई के साथ घर और आसपास का भी ध्यान रखना चाहिए अच्छे स्वास्थ्य के लिए जिस तरह से भोजन आवश्यक है उसी तरह मनोरंजन, खेल कूद का भी महत्व है. खेलने से मन की थकान दूर होती है, शरीर मजबूत भी बनता है. अगर नींद पूरी न हो तो थकान और सुस्ती आ जाती है. काम में मन नहीं लगता और व्यक्ति चिड़चिड़ा हो जाता है. अतः हमें अपने शरीर का हर तरह से ध्यान रखना चाहिए.

अच्छी आदतें

रचनाकार-पुष्पलता साहू

आओ बच्चों तुम्हें मैं कुछ बात बताऊं,
अच्छी आदतें आज तुम्हें सिखाऊं.
करनी हो जब पार तुम्हें सड़क
ध्यान ना जाए भटक.
दाएं बाएं फिर सिग्नल देखो,
हरी बत्ती देख आगे बढ़ो.
करना है जो आज झटपट कर
डालो,
आज का काम तुम कल पर ना टालो.
कभी किसी से तुम झूठ ना बोलो,
सदा सत्य और मीठा ही बोलो.
जल्दी उठो सुबह और सैर पर जाओ,

बीमारियों को कोसों दूर भगाओ.
रखो स्वच्छता का हमेशा ध्यान,
कचड़े का कूड़ादान में ही करो निपटान.
रोज करो तुम ब्रश और स्नान,
नियमित रखो हमेशा अपना खानपान.

रूख-राइ ल देंवता जानौ

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

नरवा तीर म फरे हे जाम
खाये के हवे हमला काम.

कौनो ल काबर डर्राबोन
जुरमिल के मन भर खाबोन.

खावत भर ले छक के खावौ
जेब म भर के घर ले जावौ.

नइ हे कौनो रोका-छेंका
कतको खावौ डारा-फेंका.

एक बात फेर मोरो मानौ
रूख-राइ ल देंवता जानौ.

करना हवे इनकर सनमान
येमा बसथे सँउहत भगवान.

हमारे प्रेरणास्रोत-मैंगते चंग्नेइजैंग मैरी कॉम

रूकना जिसे आता नहीं संघर्ष ही जिसकी पहचान है.
देश को अपनी जिस धरोहर पर बड़ा अभिमान है.
देश की बेटियों की ताकत की जो विश्व में पहचान है.
ऐसी महान मजबूत मैरीकॉम को तहे दिल से सम्मान है.

जी हाँ बच्चो आप समझ गये होंगे मैं बात कर रही हूँ हमारे देश की स्टार महिला मुक्केबाज मैरी कॉम की, जिन्होंने अपनी लगन और मेहनत से यह साबित कर दिया है कि प्रतिभा का संबंध अमीरी या गरीबी से नहीं होता.

मैरी कॉम का जन्म मणिपुर के एक गाँव में हुआ. वह अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी थीं. उनके पिता खेत में दिन-रात मेहनत करते जिससे उनके परिवार को दो वक्त का खाना मिल सके. गाँव की दुकान में भी टॉफ़ी, कैंडी, मिठाइयाँ मिलती थीं पर मैरी कॉम के घर की आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि उन्हें वह चीजें मिल सकें.

मैरी कॉम की रुचि बचपन से ही खेलों में थी. उस वक्त उनके गाँव में लड़कियाँ खेलती नहीं थी सिर्फ लड़के ही खेला करते थे. लड़के फुटबॉल खेलते तो मैरी कॉम भी लड़कों के साथ खेला करती थी. खेलने में इतना मजा आता कि जब तक रौशनी रहती तब तक खेलती रहती थी. इस वजह से माँ से खूब डाँट भी पड़ती थी उनके पिता को भी उनका यूँ लड़कों के साथ खेलना पसंद नहीं था. उनके पिता को यह लगता था कि यह दिन भर खेलेगी तो इससे ब्याह कौन

करेगा. परन्तु समाज क्या कहेगा यह उन्होंने कभी नहीं सोचा जो कुछ करने की ठान ली वो करके दिखाया.

मम्मी पापा पढ़े लिखे नहीं थे. आगे क्या करना है? रास्ता दिखाने वाला कोई नहीं था. परन्तु स्पोर्ट्स में अच्छी होने के कारण उन्हें सभी टीचर्स पसंद करते थे. टीचरों के बार-बार समझाने पर उन्होंने स्पोर्ट्स में अपना कैरियर बनाने की सोची. माता-पिता को बिना बताए इम्फाल में स्पोर्ट्स एकेडमी ज्वाइन कर ली. वहाँ उनकी मुलाकात बॉक्सिंग के कोच नरजीत सिंह से हुई. बॉक्सिंग के प्रति मैरी के जोश और उत्साह से इतने प्रभावित हुए कि वह उन्हें कोचिंग देने के लिए तैयार हो गये. यहीं से उनके बॉक्सिंग करियर की शुरुआत हुई और मात्र 18 वर्ष की उम्र में उन्होंने यह साबित कर दिया कि बॉक्सिंग सिर्फ पुरूषों के लिए ही नहीं बल्कि महिलाओं के लिए भी है.

मैरी कॉम की शादी ओन्लर कॉम से हुई. उसके बाद वह जुड़वाँ बच्चों की माँ बनीं. अपने परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी के कारण वह काफी समय मुक्केबाजी रिंग से बाहर रहीं. 2012 के ओलंपिक खेलों में जाने का जब उन्हें निमंत्रण मिला तो वह काफी उत्साहित हुईं. शादी और जुड़वाँ बच्चों के बाद वापस रिंग में उतरना उनके लिए आसान नहीं था. वह बच्चों को अपने मायके में छोड़कर प्रैक्टिस करने एकेडमी जाती थीं. सभी सोच रहे थे कि शादी और दो बच्चों के बाद महिलाएँ कमजोर पड़ जाती है. पर इसके विपरीत ओलंपिक गेम्स में जब उन्होंने मेडल जीता तो मैरी कॉम की आँखों से आँसू रूक नहीं रहे थे. मैरी कॉम ने वीमेन बॉक्सिंग में छः गोल्ड मेडल देश के लिए जीते हैं.

उनका यह मानना है कि ‘‘कभी हार मत मानो हमेशा अगला मौका जरुर आता है.’’ उनकी हिम्मत और लगन ने आज उन्हें हमारा प्रेरणास्त्रोत बना दिया है.

मोबाइल

रचनाकार-टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला"

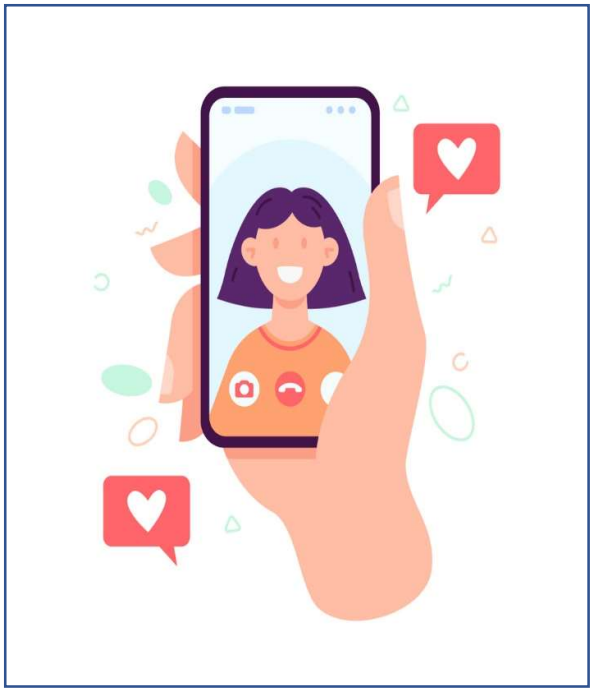

बच्चों ध्यान से सुनो मेरी बात.
जरूर जानो मोबाइल की करामात.
मोबाइल का सही उपयोग करो.
इसका न कभी दुरुपयोग करो.
सिर्फ काम की चीज सर्च करो.
फिर दिमाग अपना खर्च करो.
मोबाइल सिखाता है अच्छी बातें.
देता है हमें यह अच्छी सौगातें.
तुम्हें आगे यह जरूर बढ़ाएगा.
एक उज्जवल भविष्य बनाएगा.

तितली आई

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

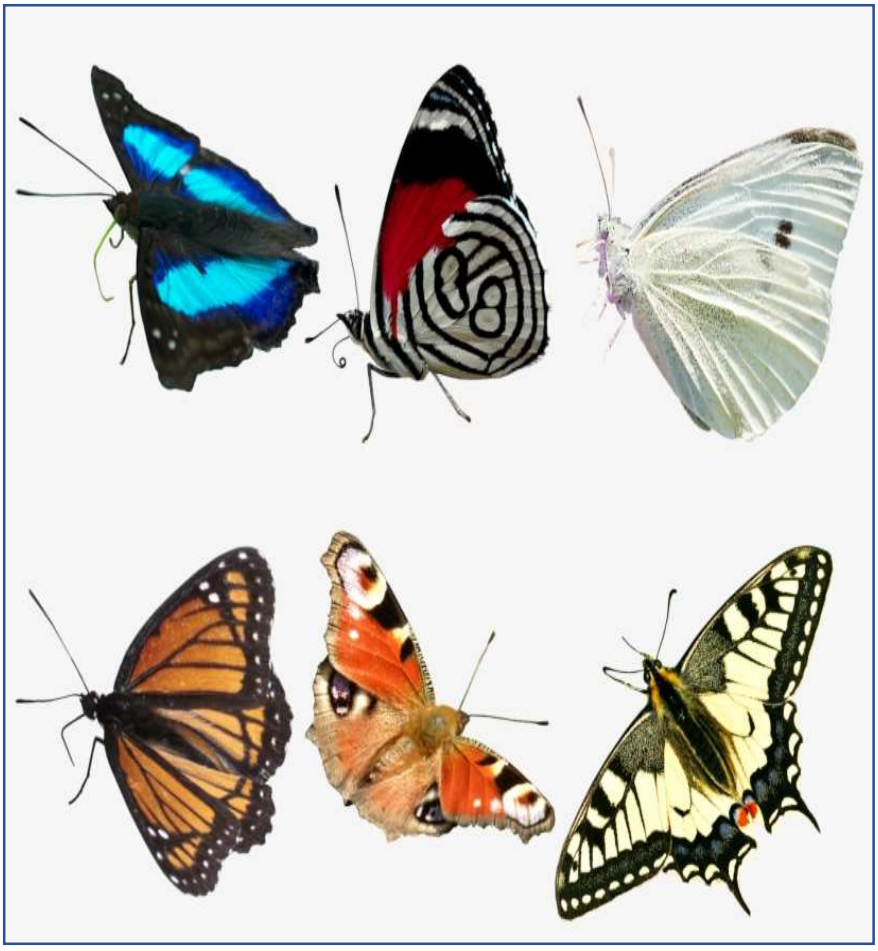

तितली आई जब बगिया में
भौंरे भी तो आए,
तितली आई चुपके-चुपके
भौंरे गीत सुनाए.

तितली आई जब बगिया में
कलियाँ भी मुस्काई,
धीरे-धीरे फूल खिले तब
मुनिया दौड़े आई.

तितली आई जब बगिया में
बच्चे भी तो आएँ,
तितली उड़ी कहीं दूर तलक
वे भी दौड़ लगाएँ

सफलता की कहानी-आगे बढ़ने की चाह

बालिका का नाम-कु. अंजली वाकरे

कक्षा -पहली

विद्यालय का नाम -शासकीय प्राथमिक विद्यालय बेलगहना, कोटा, बिलासपुर

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले के कोटा ब्लॉक के सुदूर गाँव कोन्चरा में रहने वाली बालिका अंजलि वाकरे बहुत ही चंचल एवं जिज्ञासु प्रवृत्ति की है. अंजलि वाकरे का बड़ा भाई गौरेला पेंड्रा मरवाही जिला में अध्ययनरत है अंजलि जब विद्यालय में प्रवेश के लिए आई तब अपने बुजुर्ग दादा जी के साथ थी जब उससे बात की गई तो उसने अपना पूरा परिचय बताया, उसने कुछ गीत और कविताएँ भी सुनाईं. वह कुछ अक्षरों और अंकों की पहचान भी कर सकती थी.

मैंने पूछा यह सब तुमने कहाँ से सीखा? तब उसने बताया कि मैं अपनी माँ से पढ़ती हूँ, अपने बड़े भाई की किताब को मैं देखती हूँ. घर पर बूढ़े दादा जी माँ और एक भाई है दादाजी शुरू में विद्यालय तक पहुँचाते थे पर उन से अब पैदल चला नहीं जाता. वह अंजलि वाकरे को लेकर इस ओर आने वाले किसी वाहन चालक से मदद लेकर विद्यालय तक पहुँचे थे.

अंजलि प्रतिदिन विद्यालय आती है विद्यालय में वह मन लगा कर सीखती है. वर्तमान में वह अपने स्तर के अनुसार हिंदी अंग्रेजी पढ़ लेती है इसी तरह उसे गणित में 18 तक पहाड़ा याद है वह पहली कक्षा की किताबें पूरी पढ़ चुकी है. अब कक्षा दूसरी के बच्चों के साथ बैठकर पढ़ती है उनकी नई नई किताबों को देखती है और अब उनसे सीखना शुरू कर दिया है. अब वह कक्षा दूसरी की हिंदी अंग्रेजी पुस्तकें फपढ़ने लगी है कक्षा में कराई जाने वाली गतिविधियों में सबसे आगे रहती है स्वयं सीख कर अन्य बच्चों को भी अपने साथ सिखाती है.

कभी-कभी साधन नहीं मिल पाता है तब ऐसी स्थिति में अपनी माँ के मोबाइल से पढ़ाई करते हुए वीडियो बनाकर भेजती है और गृह कार्य क्या है यह पूछती है. माँ के साथ वह बाड़ी के काम में मदद करती है. भाई चौथी कक्षा में पढ़ता है. जब माँ को खेती के काम में ज्यादा समय लगता है तो वह अपने भाई से पूछ कर पढ़ती है. पढ़ने लिखने में उसकी विशेष रूचि है वह कक्षा में खेल के समय भी स्लेट बत्ती और किताब से खेलती लिखती है अंजलि में सीखने की जिज्ञासा बहुत है. पिता का सहयोग न मिलने के कारण माँ पर परिवार का बोझ है. माँ बहुत ही संघर्ष करके अपने बच्चों को पढ़ा रही हैं.

कोरोना काल के समय जब विद्यालय बंद थे तब वह ऑनलाइन पढ़ती थी पर सुदूर अंचल में नेटवर्क न मिलने के कारण वह मोबाइल में दिखाए गए कंटेंट चित्र नहीं देख पाती थी तब वह अपनी माँ के साथ ऑनलाइन कक्षा में रहती और मैडम पढ़ाती थी तब माँ उसे सुनकर पुस्तक द्वारा समझ कर उसे चित्र दिखाकर पाठ पढ़ाती सिखाती थी जिसका परिणाम यह मिला है कि वह बच्ची बहुत ही लगन से पढ़ रही है और आगे बढ़ रही है. शिक्षिका भी उसकी परेशानियों को समझकर एवं उसकी पढ़ने की ललक को देखकर आगे आकर उसकी मदद करती है. माँ संघर्ष करते हुए अपने दोनों बच्चों को पढ़ा रही हैं. अंजलि वाकरे अन्य बच्चों की भी मदद करती है. वह अपनी शिक्षिका से प्रेरित होकर शिक्षिका बनना चाहती है ताकि वह अपने जैसे और बच्चों को पढ़ा सके और कुछ नया सिखा सके.

मिठुआ आम

रचनाकार-डॉ. सतीश चन्द्र भगत

चलो चलें हम पता लगाएं,
किस गाछी में मिठुआ आम.

तोड़ेंगे चखकर देखेंगे,
नहीं लगेंगे कोई दाम.

चलो चलें मिलकर हमजोली,
जिस गाछी में मिठुआ आम.

नन्हें बच्चों वाली टोली,
मिलकर खाएंगे सब आम.

हंसते-गाते, उधम मचाते,
हम पहुँचे बाबा के धाम.

बाबा ने सबको दुलराया,
दिये टोकरी भरकर आम.

मीठे और रसीले इतने,
सबने खाये छककर आम.

गाछी- आम का बाग

गाँव छोड़ शहर की ओर चला

रचनाकार-अनिता चन्द्राकर

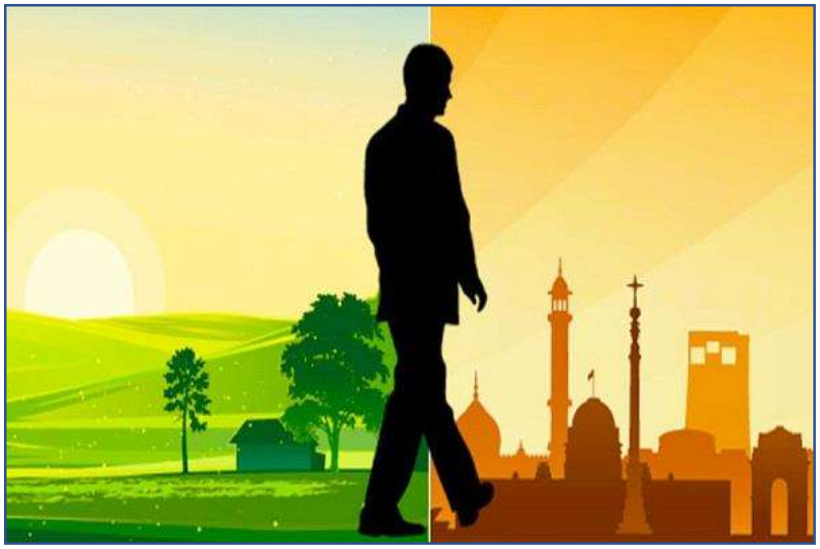

छोड़ गाँव की मिट्टी, चल पड़ा शहर की ओर.
था ज़ुनून धन संग्रह का, दिल का बना कठोर.

रास आ गई चकाचौंध, तब गाँव गया वह भूल.
पैसा बंगला मोटर गाड़ी, पर ख़ुशी हो गई गुल

जगह जगह भीड़ भाड़, एक दूजे से अनजाने.
भावना शून्य लोग यहाँ के, सब पैसे के दीवाने.

याद आती है वो गलियाँ, जहाँ सभी थे अपने.
मत भूलो गाँव को, बस पूरे करने कुछ सपनें.

नटखट नन्ही

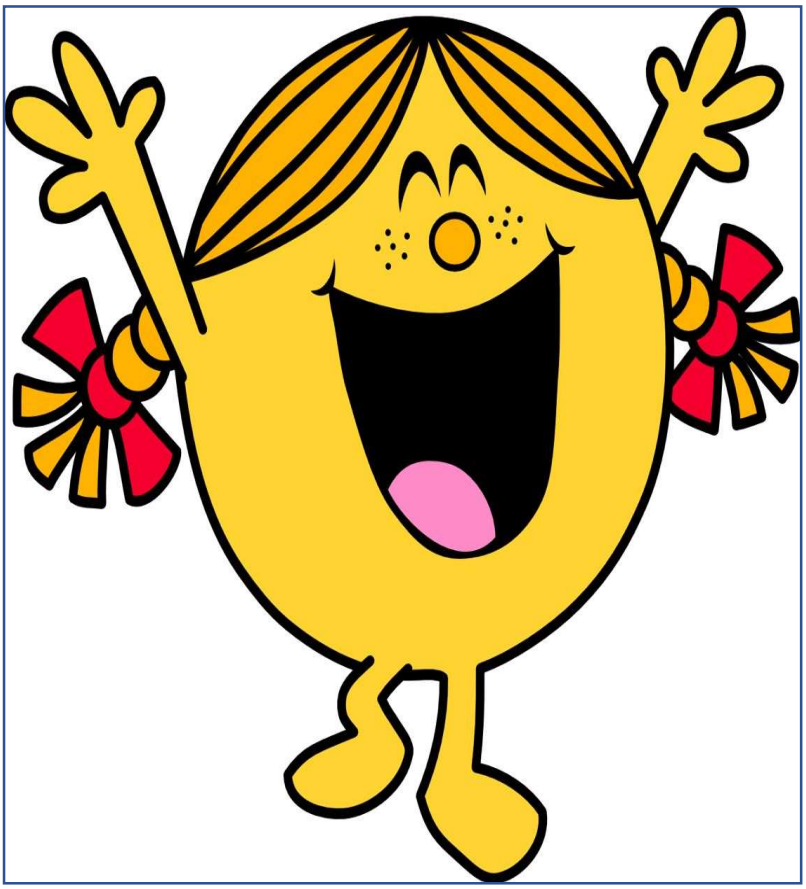

1. नन्ही: मैं जब किसी से बात करती हूँ तो वो मुझे दिखाई नहीं देता.
   डॉक्टर: अरे! पर ऐसा कब होता है?
   नन्ही: फोन पर बात करते समय.

2. नन्ही अपने दोस्त के घर गई.
   दोस्त ने पूछा : नन्ही तुम हलवा खाओगी या खीर?
   नन्ही : क्यों? तुम्हारे घर में एक ही कटोरी है क्या?

3. टीचर: दुनिया में कितने देश हैं?
   नन्ही : एक ही है, भारत.
   टीचर: अच्छा? तो ये अमेरिका, फ्रांस, इंग्लैंड, जर्मनी क्या हैं?
   नन्ही : ये तो सारे विदेश हैं न ?

4. माँ: अरे नन्ही, तुमने दोनों पैरों में अलग-अलग रंगों के मोजे क्यों पहने हैं?
   कमरे में जाकर इन्हें बदल आओ.
   नन्ही: कमरे में जाने का कोई फायदा नहीं है,
   वहाँ भी ऐसे ही अलग-अलग रंगों के मोजे हैं.

5. नन्ही: माँ, मुझे इतिहास विषय बिल्कुल अच्छा नहीं लगता.
   माँ: पर क्यों नन्ही?
   नन्ही: उसमें ऐसे समय की बातें होती हैं जब मेरा जन्म भी नहीं हुआ था.

होली का त्यौहार

रचनाकार-अनिता चन्द्राकर

आया महीना फागुन का, सब मिल गाएँ फाग.
फूलों से लद गए पलास, भर गए मधुर पराग.
इठलाती आई पुरवाई, किसने छेड़ा वासन्ती राग.
रंग लगायें प्यार का हम, बुझा नफ़रत की आग.
रंग गुलाल पिचकारी से, सज गए हाट बाजार.
बच्चों के चेहरों पर छा गई, देखो ख़ुशियाँ अपार.
मिटा अहंकार मन का, कहता होली का त्यौहार.
विजीत हुआ है सत्य सदा, होती बुराई की हार.

ज्ञान की पाती-विश्व पेंगुइन दिवस

रचनाकार-चानी ऐरी

जब भी अंटार्कटिका की बात होती है, पेंगुइन का नाम आ ही जाता है...पेंगुइन शब्द लैटिन भाषा से आया है पिन्गुईस मूल से आए इस शब्द का अर्थ होता है चर्बी या मोटापा..इस तरह पेंगुइन नाम का सीधा सा मतलब हुआ मोटी या मुट्की, जो शायद इनके मटक मटक के चलने के कारण पड़ा होगा.

पानी में जीवन के लिए अत्यधिक अनुकूलित, पेंगुइन, काले और सफ़ेद रंग के बालों वाला पक्षी है और उनके पंख हाथ (फ्लिपर) बन गये हैं. हालाँकि सभी पेंगुइन प्रजातियाँ दक्षिणी गोलार्द्ध की मूल निवासी हैं, लेकिन ये केवल अंटार्कटिक जैसे ठंडे मौसम में ही नहीं पाई जातीं.

पेंगुइन सबसे प्राचीन प्रजाति है जो लगभग 40 करोड वर्ष पहले पृथ्वी पर आई थी.

पेंगुइन उड नही पाते.इनके दाँत नही होते हैं और येअपनी चोंच से ही काम करते है. पेंगुइन के विषय में कुछ और रोचक तथ्य इस प्रकार हैं

1. पेंगुइन कई प्रकार की मछलियाँ और अन्य सीलाइफ को खाते हैं जिन्हें वे पानी के नीचे पकड़ते हैं.
2. पेंगुइन पानी से बाहर 6 फीट (1.8 मीटर) तक कूद सकते हैं.?
3. आम तौर पर, पेंगुइन यौन रूप से नर और मादा पेंगुइन एक जैसे दिखते हैं.
4. पेंगुइन समुद्र का पानी पी सकते हैं.
5. पेंगुइन कंकड़ और पत्थरों के साथ-साथ भोजन निगलते हैं वैज्ञानिकों का मानना है कि पत्थरों को पीसने और उनके भोजन को पचाने में मदद मिल सकती है पेंगुइन को गहराई में गोता लगाने में मदद करने के लिए पत्थर भी पर्याप्त अतिरिक्त वजन जोड़ सकते हैं.
6. अंटार्कटिका के ठंडे तापमान में गर्म रहने के लिए पेंगुइन्स अक्सर एक साथ झुण्ड बनाते हैं.
7. पेंगुइन के पास एक अंग है जो पानी से नमक को अपने सिस्टम से बाहर निकालता है.
8. सम्राट पेंगुइन 500 मीटर से अधिक की गहराई में डुबकी लगाने में सक्षम है और 27 मिनट तक पानी के नीचे रह सकता है.
9. पेंगुइन के समुह को कॉलोनी या रुकरी (Rookery) कहते है.

पेंगुइन पृथ्वी का एक अनोखा और सुंदर पक्षी है. धीरे धीरे इनकी संख्या में कमी आ रही है साथ ही ग्लोबल वार्मिंग भी इनके अस्तित्व के लिए चिंता का विषय है. अत: इनकी प्रजाति को बचाने हेतु 25अप्रैल 1972 सा विश्व पेंगुइन दिवस मनाना शुरु किया गया.

महाशिवरात्रि

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

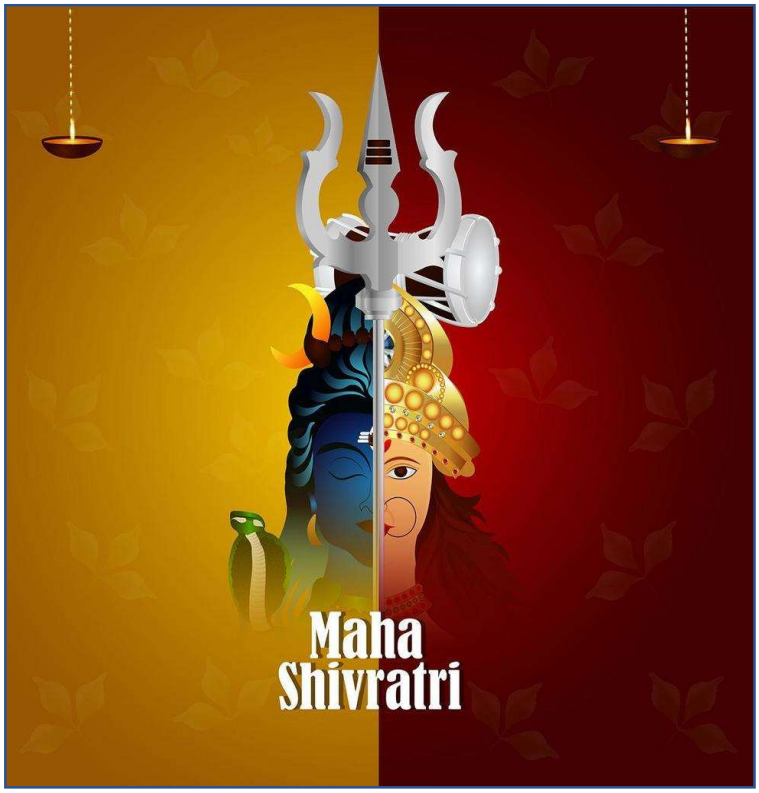

ध्यान मग्न रहते सदा, पर्वत करते वास.
बाबा भोलेनाथ जी, पूरा करते आस..

काँवर पकड़े हाथ में, जाते हैं शिव धाम.
बम-बम भोले नाथ की, जपते रहते नाम..

सर में जटा विराज है, बहती गंगा धार.
कुंडल सोहे कान में, गले रुद्र की हार..

डम-डम-डम डमरू बजा, करते भोले नाच.
पर्व महाशिवरात्रि पर, नाचे भूत पिशाच..

बाबा भोलेनाथ जी, दर्शन देदो आज.
आये तेरे द्वार पर, रख दो सबकी लाज..

किचन गार्डन

रचनाकार-सपना यदु

हम सबका है एक ही सपना,
हरा-भरा हो किचन गार्डन अपना.
मिलकर सब्जियां लगाएंगे,
खाकर स्वस्थ हो जाएंगे..

भटा, टमाटर, भिंडी, लौकी
पालक और मेथी लगाएंगे.
मिलकर सब्जियां उगाएंगे,
खाकर स्वस्थ हो जाएंगे..

आओ दीदी, आओ भैया,
मिलकर करें हम इसकी सेवा.
इनके बीजों में पानी डालें,
गार्डन को हरा-भरा बनाएं..

छोटी-छोटी क्यारियां बनाकर,
पानी सब तक पहुंचाएंगे.
गोबर और खाद डालकर,
इसकी उर्वरकता बढ़ाएंगे..

करेंगे हम इसकी सुरक्षा,
चारों ओर घेरा लगाएंगे.
कांटे या कटीले तार लगाकर,
पशुओं से इसे बचाएंगे..

इको क्लब का करके गठन,
सबको सदस्य बनाएंगे.
सबको उनके काम सौंपकर,
विद्यालय की शोभा बढ़ाएंगे..

जंगल में होली

रचनाकार-श्वेता तिवारी

जब तुम खुद इतने छोटे हो तुम्हारे दोस्त मक्खी खटमल चींटी और जू यह सब कितने छोटे हैं हा हा शेर खान ने हिरण और खरगोश का मजाक उड़ाते हुए कहा.

हम सब दोस्त हैं दोस्ती में कोई छोटा बड़ा नहीं होता मेरे दोस्त भी बड़ा काम कर सकते हैं. जो छोटा है वह भी बड़े काम कर सकता है. हिरण ने जवाब दिया.

कल होली का त्यौहार है घर दुकाने रंगों से सजेंगी, अलग-अलग प्रकार की प्रतियोगिताएँ होंगी देखना मैं तो जीत ही जाऊँगा. मुझ से टक्कर मत लेना छोटे दोस्तों के छोटे दोस्त शेर खान ने गुर्राते हुए कहा.

हिरण आत्मविश्वास से बोला अभी से कैसे कहते हो कि तुम जीत जाओगे मैं भी प्रतियोगिता में भाग लूँगा हो सकता है छोटे दोस्तों की मदद से मैं ही जीत जाऊँ. शेरखान होली के लिए सजी हुई दुकान ब में पहुँचा और सोचने लगा सारे रंग पिचकारी मुखौटा मैं ही खरीद लूँगा देखता हूँ हिरण कैसे रंगों से होली खेलता है. हिरण के दोस्त उससे कहने लगे तुमने एक भी पिचकारी, मुखौटा, रंग, गुलाल, फुग्गा नहीं खरीदा है तुम होली कैसे खेलोगे? शेर खान का मुकाबला कैसे करोगे? शेरखान को सारा सामान खरीदते हमने देखा है.

हिरण ने कहा होली के लिए फालतू रंग गुलाल मुखौटा पिचकारी में पैसा गंवाना व्यर्थ है, अभी कोरोना फैला हुआ है, मैं अपने नन्हे दोस्तों को कोरोना से बचा लूँगा हिरण के घर बहुत सारे

सुंदर-सुंदर रंग थे फूलों से बने हुए और अलग-अलग प्रकार की मिठाइयाँ भी थीं. उसके घर में रंग बिरंगी तितलियाँ आ गई थीं और जुगनू भी आ गए थे जिसके कारण घर बहुत सुंदर दिख रहा था सभी दोस्त आँगन में दूर दूर खड़े होकर फूलों से बने रंगों को एक दूसरे के ऊपर डालने लगे और टीका करने लगे सब लोगों ने अपने मनपसंद फूलों से मुखौटा तैयार किया था उसे लगाया. हिरण की माँ ने मिठाई बनाई थी सभी ने मिठाई खाई और उसके बाद हिरण की माँ ने पत्तियों से बने मास्क सभी को उपहार में दिए और कहा कि इस कोरोना में हमें होली का त्यौहार दूर से ही मनाना है हमें सुखे रंगों का उपयोग करना है. हमें बार-बार हाथ धोना है हाथों को सैनिटाइज करना है और मास्क लगाना है दूरी बना कर रखना है हिरण की माँ ने सभी को समझाया. सभी बच्चे हँसी खुशी आंगन में होली मिलन करने के बाद अपने-अपने घर लौट आए. इस तरह हिरण की जीत हुई क्योंकि सभी जानवरों ने हिरण की होली को पसंद किया और शेर खान अपने घमंड के कारण हार गया क्योंकि वह बहुत सारी बाजारी चीजें खरीद कर होली मना रहा था.

चलो स्कूल

रचनाकार-योगेश्वरी तम्बोली

हरे हरे पत्ते लाल लाल फूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

छूट गई पेन्सिल कापी गई भूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

बाग में है झूला जा के झूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

बगीचे में पेड़ है पेड़ में है फूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

छूट गई बत्ती स्लेट गई भूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

काली काली कोयल डाली रही झूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

छूट गई बैग थाली गई भूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

टीचर के हाथ में नही है रूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

शाला में है बेंच और है स्टूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

मैडम सुनायेगी कविता जरा नही भूल
चलो भाई जल्दी चलो स्कूल

आज है सन्डे गई थी मैं भूल
गेट पे है ताला बंद है स्कूल

भोले भंडारी

रचनाकार-सोमेश देवांगन

हे मेरे प्रभू महेष, बाबा शिव भोले भंडारी.
मै सोमेश बना बन्दर, बाबा भोले बने मदारी..

हाथ डमरू, त्रिशूल, बाघाम्बर ओढ़े त्रिपुरारी.
देने वाले आप हो प्रभू मै हूँ केवल भिखारी..

भष्म रमाये बैठे करते हो नंदी की सवारी.
जन्म जन्म से हूँ बाबा आपका आभारी..

गले मे नाग की माला कान में बिच्छू बाला.
कैलाश पति हे शिवशंकर मेरे डमरू वाला..

हलाहल विष को पीकर जग को संभाला.
क्रोध जब आये तो पृथ्वी को हिला डाला..

माथ में चँदा सुंदर सोहे पिये भांग का प्याला.
बैठे धुनि रमाये जपते राम नाम की माला..

जटा से बहती है निर्मल पावन गंगा की धार.
शिव भक्ति ही है जीवन का मात्र असली सार..

अर्धनारीश्वर बन प्रभू किया दुष्टों का संहार.
मेरे भोलेनाथ आप की महिमा है अपरम् पार..

स्कूल की यादें

रचनाकार-स्वाति पांडे

एक छोटा सा गाँव था. छोटे-छोटे बच्चे गाँव के ही स्कूल में पढ़ने जाते थे. उन बच्चों में दो अच्छे दोस्त थे राम और श्याम. राम सीधा-साधा गंभीर और शांत स्वभाव का था, किंतु श्याम नटखट, उछलकूद करने वाला, शैतानी करने वाला बच्चा था.श्याम अक्सर स्कूल से छुट्टी लेकर या भागकर मौज मस्ती करने चला जाता था. राम उसे समझाता था कि खेलकूद और मौज मस्ती के साथ पढ़ाई भी आवश्यक है. किंतु श्याम उसकी बातों पर ध्यान नहीं देता था और अपनी ही धुन में रहता था.

अचानक चीन से शुरू हुई एक बीमारी कोरोना ने पूरे विश्व में खौफ का माहौल पैदा कर दिया. पूरे देश में इस महामारी से बचने के लिए लॉकडाउन करना पड़ा. आपस में लोगों का मिलना जुलना भी कम हो गया. शारीरिक दूरी का पालन करने के कारण बच्चों का बाहर खेलना भी बंद हो गया. राम और श्याम भी अपने-अपने घरों में बंद हो गऐ. स्कूल बंद हो गया. सभी बच्चे अपने घरों में बोर होने लगे. इसी दौरान राज्य सरकार की महत्वपूर्ण योजना "पढ़ई तुँहर दुवार" शुरू की गई. शासन के निर्देशों के अनुरूप शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाएँ लेना प्रारंभ किया. राम की पढ़ाई में रुचि थी वह ऑनलाइन कक्षाओं में शामिल होता किंतु श्याम इन कक्षाओं में शामिल नहीं होता था. शरारतें और घूमने फिरने का मौका न मिलने के कारण श्याम अपने घर में उदास रहने लगा. उसे अपना स्कूल और स्कूल के दोस्त याद आने लगे. धीरे-धीरे वह बीमार सा लगने लगा. उसने एक भी दिन ऑनलाइन कक्षा में भाग नहीं लिया था. राम और श्याम की मम्मी की आपस में बात हुई तो राम की मम्मी ने श्याम की मम्मी

को बताया कि इन परिस्थितियों में भी शिक्षकों ने ऑनलाइन क्लास के माध्यम से खेल खेल में शिक्षा, खिलौनों के माध्यम से शिक्षा, ऑगमेंटेड रियलिटी टेक्नोलॉजी के माध्यम से शिक्षा एवं योग शिक्षा के माध्यम से बच्चों को स्वस्थ एवं जागरूक बनाया है.

श्याम की मम्मी ने तुरंत श्याम की बात राम से कराई. श्याम ने बताया कि वह अपना स्कूल और अपने दोस्तों एवं शिक्षकों को मिस कर रहा है. तो राम ने बताया भाई हम सभी दोस्त शिक्षक ऑनलाइन क्लास में आपस में मिलते हैं, और पढ़ाई के साथ-साथ योग, खेलकूद एवं एक्सरसाइज भी करते हैं. हमें खूब मजा आता है, एवं शिक्षकों के द्वारा हमें जो घर में गतिविधियाँ कराई जाती है उनमें और भी मजा आता है. समय भी बीत जाता है और पढ़ाई भी हो जाती है.श्याम भी दूसरे दिन से ऑनलाइन क्लास अटेंड करने लगा और धीरे-धीरे स्वस्थ हो गया. इस प्रकार ऑनलाइन क्लास कारगर साबित हुई. श्याम को अपने दोस्तों और शिक्षकों से मिलने के साथ-साथ पढ़ाई का भी माहौल मिला एवं वर्चुअल क्लास के माध्यम से उसे स्कूल की यादों की जगह स्कूल का ही माहौल मिला.

नमक

रचनाकार-महेंद्र कुमार वर्मा

हर घर की है शान नमक,
हर घर का अभिमान नमक.

भोजन का स्वाद बढ़ाती,
होती गुण की खान नमक.

राजा हो या रंक फ़कीर,
सबसे पाता प्यार नमक.

नमक बिना भोजन सूना,
मुखड़े की मुस्कान नमक.

आयोडीन युक्त बनती,
सेहत की वरदान नमक.

सबकी चाहत पाती है,
रसोइयों की शान नमक.

पैसा

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

जीवन जीने के लिए, करते हैं सब काम.
मिल जाते पैसे अगर, करते फिर आराम..

बनते पैसों से बड़े, आज यहाँ इंसान.
करते पूजा रोज है पैसा ही भगवान..

ऐसा कलयुग आ गया, टूटे घर परिवार.
पैसे खातिर लोगअब, छोड़े घर अरु द्वार..

लालच को तुम छोड़कर, करो नेक अब काम.
मिले सफलता रोज ही, होगा जग में नाम..

पैसा ही सबकुछ यहाँ, करते पैसे बात.
भेद अमीर-गरीब का, तय करते हालात..

अनोखा बस्तर के अनोखे समाधि स्तंभ

रचनाकार-रजनी शर्मा बस्तरिया

"बस्तर के समाधि स्तंभ"

आप सभी ने तो कहीं ना कहीं बस्तर के समाधि स्थल के बारे में पढ़ा ही होगा. समाधि का अर्थ भी आप जानते ही होंगे ना.अपने परिजन की याद में कहीं कोई चिन्ह, आकृति स्थापित की जाती है, वही समाधि का प्रतीक होता है.अगर वह एक लंबा स्तंभ के रूप में हो तो यह बस्तर के संदर्भ में समाधि स्तंभ कहलाता है.परंतु धरोहर के रूप में बस्तर के समाधि स्तंभ को सहेजे जाने की आवश्यकता क्यों है ? इसका उत्तर है कि बस्तर के समाधि स्तंभ पूरे विश्व में सबसे अनोखे हैं. इस समाधि स्तंभ को अगर हम बिंदुवार समझने का प्रयास करें तो ज्यादा सरल होगा.

बिंदु निम्न है :-

पहला बिंदु_ समाधि स्तंभ किसे कहते हैं ?

दूसरा बिंदु__ समाधि स्थल कहां पाए जाते हैं ?

तीसरा बिंदु __इसे क्यों बनाया जाता है ?

चौथा बिंदु __इन में क्या बना होता है ?

पांचवा बिंदु _समाधि स्थल से गोत्र का पता कैसे चलता है?

आइए पहले बिंदु की ओर चलें.

समाधि स्थल क्या होते हैं ?

मानव सभ्यता के लिए जितना समाधि स्तंभ पुराना है, उतना और कोई धरोहर नहीं होगा. यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी. मानव अपने पूर्वज और प्रकृति की सदा उपासना करता ही आया है.अपने पूर्वजों की याद में बस्तर के आदिवासी, जनजाति, जातियां समाज समाधि का निर्माण करते हैं और उसमें उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन जैसे पत्थर, लकड़ी, मिट्टी की कोई आकृति वहां पर स्थापित करते हैं.यही कालांतर में बस्तर के समाधि स्थल के रूप में पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुए.

दूसरा बिंदु है कि ये समाधि स्तंभ कहां पाए जाते हैं?

वैसे तो पूरा बस्तर आपको इनकी जीती जागती प्रामाणिकता जगह-जगह पर प्रस्तुत करता ही आया है. परंतु गोंड समाज बहुल क्षेत्र बस्तर का 'किलेपाल'और इनके आसपास के बहुत से गांवों में रोचक आकर्षक समाधि स्थल आपको बहुतायत में देखने को मिल ही जाएंगे.

तीसरा बिंदु है इसे क्यों बनाते हैं?

बस्तर के आदिवासी अपने प्रकृति पर असीम आस्था रखते हैं. इनके रीति-रिवाज लोक कला संस्कार सब में प्रकृति ही सर्वोपरि होता है.प्रकृति से ही सम्मान पूर्वक मांगे गए संसाधनों से यह अपना जीवन यापन करते हैं.साथ-ही-साथ उनके सम्मान के लिए समाधि स्थल भी निर्मित करते हैं और इसके ही माध्यम से वे अपने मृतक, पूर्वजों को याद भी करते हैं.

चौथा बिंदु है कि इन समाधि स्तंभों में क्या बना होता है ?

आपको जानकर आश्चर्य होगा की समाधि स्तंभ में उकेरे गए चित्र के आधार पर आप गोत्र की पहचान कर सकते हैं.समय के साथ-साथ इन में परिवर्तन भी आते गए हैं.

पहले पत्थर को तराश कर उसमें मृतक का नाम लिखकर स्थापित किया जाता था.अब समय के साथ इन समाधि स्तंभों में चटक रंग जो प्राकृतिक होते हैं, इनका प्रयोग करके सुंदर आकृतियाँ बनाई जाने लगी है. इनमें जो रंग प्रयोग में लाए जाते हैं, वे जड़ी-बूटी, महुआ, कत्था

पलाश, अग्निमुख गोदना की स्याही, भेलवां, पेड़ की छाल के रस, गेरू-माटी से विभिन्न प्रकार के रंग बनाकर कलाकृतियां बनाई जाती हैं.

जैसे कि नृत्य करते हुए बायले याने की महिला और इसमें विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्र जैसे कि नड़गा बाजा, टुड़बुड़ी, मांदर, तुरही बाजा बजाते हुए की आकृति भी बनायी जाती है.

जैसे कि अगर कोई समाधि स्तंभ में कृषि के औजार हंसिया, नागर आदि की आकृतियाँ हैं तो इससे पता चल जाता है कि मृतक खेती के काम में संलग्न था और उसका गोत्र लोहार गोत्र होगा.लोहार अर्थात लोहे का काम करने वाला.

वैसे ही अगर समाधि स्तंभ में सांप के चित्र बने हों, तो यह गोत्र मृतक के लोहार के पेशे से जुड़ा हुआ है; इसका संकेत देता है. अगर इन समाधि स्तंभ में बाघ के चित्र बने हैं तो मृतक बाघ गोत्र का ही होगा.अगर इन समाधि स्तंभों में मछली पकड़ने के साथ-साथ जाल का भी चित्र हो तो मृतक मछुआरा गोत्र का हो सकता है.

इसलिए तो यह समाधि स्तंभ बस्तर को पूरी दुनिया में सबसे खास बनाते हैं और संस्कृति को भी सहेजने का शानदार प्रयास भी पूरे विश्व के सामने रखते हैं. इसी कारण से एक धरोहर के रूप में आज इन को संरक्षित किए जाने की बेहद आवश्यकता है.

चलो ज्ञान की दीप जलाएं

रचनाकार-सुरेखा नवरत्न

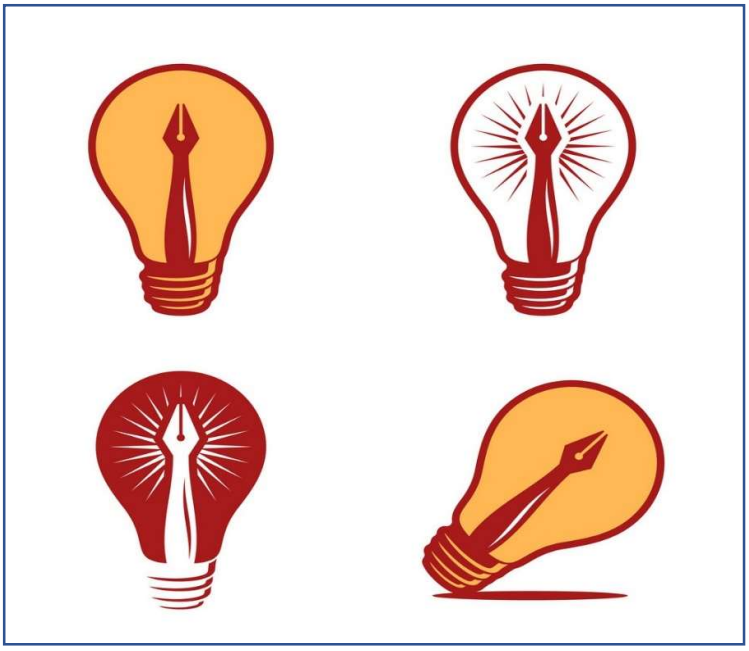

चलो ज्ञान का दीप जलाएँ
दूर तलक जहाँ तमस है.
आशा कि जोत जगाएँ
चलो ज्ञान का दीप जलाएँ
जो टूट गए हैं डाली से,
जो रूठ गए हैं माली से
वहाँ नया पुष्प हम खिलाएँ
चलो ज्ञान का दीप जलाएँ
गाँव की सकरी गलियों से,
शहरों तक, बाजारों तक.
नानाजी के गलियों से,
पीपल के चौबारों तक.
चलो ज्ञान का दीप जलाएँ
उन भोले-भाले नन्हों को,
जो भटक गए हैं राहों से.
फिर ढूँढ उसे हम ले आएँ
मदरसों के दरवाजे तक.

चलो ज्ञान की दीप जलाएँ
तू पढ़ प्यारे, आगे बढ़ प्यारे,
शिक्षा तेरे अधिकार में है.
आजा स्कूल तुझे पुकारे,
तेरा बचपन तुझे बुलाए.
चलो ज्ञान की दीप जलाएँ

गलियों से स्कूल तक

रचनाकार-सुरेखा नवरत्न

गलियों से स्कूल,
चल पड़े हैं नन्हें फूल.
पहनकर स्कूल ड्रेस,
कैसे? बदल गए हैं भेष.
हाथ में पानी डब्बा,
पीठ में लादे बस्ता.
और पैरों में लगे हैं धूल,
गलियों से स्कूल
चल पड़े हैं नन्हें फूल.
मन में लिए उत्साह,
पढ़ने लिखने की चाह.
अ,आ, इ, ई, करते हुए,
गिनती गया हैं भूल.
गलियों से स्कूल,

चल पड़े हैं नन्हें फूल.
हाथों में पकड़े थाली,
खुशी से बजाते ताली.
करे स्कूल में जलपान,
और घर को गया हैं भूल.
गलियों से स्कूल,
चल पड़े हैं नन्हें फूल.

आलसी किसान

रचनाकार-कन्याकुमारी पटेल

एक गांव म एक झन किसान रहय. ओ किसान के अड़बड़ कन गरूवा, भईसा अउ छेरी रहय. एमा ओखर एक जोड़ी भईसा रहय, जेखर से ओ ह अपन खेत के काम करय. अऊ एक ठन रहय बईला-गबरू. किसान ह गबरू के जोड़ी नईहे सोच के ओला काम म नई ले जावत रहिस. फेर ओखर करा भईसा घलो तो रहिस ओहि म अपन काम ल निपटा लेवत रहिस.

अब तो गबरू के अंतस म घलों कोड़िया पन अमा गे रहिस. ओ ह दिन-भर, बेर-कुबेरा खाय अऊ कोनो करा परे रहय. जम्मों जानवर मन ओला चेताय घलो

के ते हर निमगा आलस झन रहे कर गबरू, कोनो दिन तहुं ला काम करे ला पड़ सकथे. ये ला सुनके गबरू ह अंटियातीस अऊ कही देतिस के तुमन अपन ला देखव, मोर चिंता झन करव. अइसने बनेच दिन बितगे.

एक दिन किसान ह सोचथे के ए भईसा मन ला बेच के गबरू के जोड़ी लाना चाहि, अऊ गबरू ला घालो नांगर सिखाना चाहि.ये सोच के किसान ह गबरू के जोड़ी बिसा के ले अइस, अब गबरू के पोटा कांपे लगिस, अऊ जम्मो जानवर मन के गोठ ह घलो सुरता आवय. ओ दिन ले

गबरू ल समझ आगे के हमला खाली बेरा आलस नई करना चाही, अपन देह ल फुर्ती रखना चाहि अऊ अवईया काम बर आघू रहना चाहि.

शिक्षा- ए किस्सा ले हमन ल सीख मिलथे के मोर काम नईहे सोच के आलस नई करना चाही,हमेशा काम बर आघु तियार रहना चाही.

जंगल में होली

रचनाकार-बलदाऊ राम साहू

चलो मनाएँ हम जंगल में
होली का त्यौहार
जाने कितना अदभुत होता है,
जंगल का संसार.

बंदर लाया फल की डलिया
हाथी लाया केला
नन्ही गिलहरी झरबेरी लाई,
पर ऊँट खड़ा अकेला.

हिरन मौसी नाच रही थी
लिए हाथ गुलाल,
भालू दादा पी कर मदिरा
किया खूब बवाल.

कोयल गाई गीत पुराने
मैना नए तराने
साथ बैठकर बुलबुल रानी
लगी राग मिलाने.

गधे, घोड़े, रंगे सियार
संग लोमड़ी भी आई,
मस्ती में नाचे, धूम मचाए
गाए गीत फगुनाई.

जंगल का राजा आया
लिए हाथ पिचकारी
आगे-आगे खुद चल रहा
पीछे थी सवारी.

गैडा बजा रहा नँगाड़े
चीता डपली लाया,
लकड़बघा नाच-नाचकर
सबका मन बहलाया.

शहादत को सलाम

रचनाकार-श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

भारत माँ का बच्चा-बच्चा,
जब तेरी याद में रोया था.
ये मत पूछो तेरे पीछे किसने,
क्या-क्या खोया था??

माँ की गोदी सूनी हो गई,
जिसमें तू नित खेला था.
घर आँगन भी सूने हो गये,
जिसमें सुख-दुख झेला था..

माँ की छाती छलनी हो गई,
जब आसमां भी रोया था--

घर का कुलदीपक था वो तो,
पिता का अभिमान था.
गाँव का भोला-भाला बेटा,
भारत माँ की शान था..

बाप की हिम्मत टूट गयी थी,
जिस दिन बेटे को खोया था--

मेहंदी का रंग उड़ गया,
जब कंगन चूड़ी टूटे थे.
हाय विधाता जिस दिन तूने,
माँग से सिंदूर लुटे थे..

बंधन टूटा, साथ भी छूटा,
जो बीज प्रेम का बोया था--

हाथ में रेशम की डोरी ले,
बहना जब ये पूछती है.
कब आएगा मेरा भैय्या,
कोई तीर सीने में चुभती है..

बहन की डोली उठाने वाला,
पता नहीं क्यूँ सोया था?--

मासूम बच्चे जब यह कहते,
पिताजी कब आएंगे.
गुड्डा-गुड्डी, खेल-खिलौने,
मेरे लिए कब लाएंगे..

उस अनाथ को कौन बताए,
जिसने बचपन खोया था--

मेरे साथी, मेरे भाई,
क्यों तू मुझसे रुठ गया ?

तेरा मेरा खून का रिश्ता,
क्यूँ इतनी जल्दी टूट गया?
आज किशन ने बलराम,
जैसे भाई को खोया था--

मरते दम जिसने यारों,
दुश्मन से लोहा लिया था.
देश की शान बचाने खातिर,
अपने प्राण को दिया था..

अमर रहो मेरे वीर जवान,
यह कहके हर कोई रोया था

प्रशंसा एवं चापलूसी

रचनाकार-संतोष कुमार कौशिक

मैं बचपन में रेडियो से 'आज के चिंतन' कार्यक्रम में प्रशंसा एवं चापलूसी के बारे में सुना था. कुछ पुस्तक में पढ़ा था और इससे संबंधित अपना विचार लिख रहा हूँ ताकि बच्चों को इसके बारे में जानकारी हो सके कि "प्रशंसा और चापलूसी" क्या है? प्राय: सभी स्थानों पर हमें प्रशंसा और चापलूसी करने वाले व्यक्ति मिलते हैं उसकी पहचान कर दूसरे द्वारा अच्छा कार्य किए हुए की प्रशंसा और अपने कुछ लाभ के लिए चापलूसी करने को बचना चाहिए. प्रशंसा क्या है? क्यों करनी चाहिए इससे संबंधित एक छोटी सी कहानी मुझे याद दिलाती है.

कहानी का शीर्षक है---

सराहे जाने की लालसा

यह बात उस समय की है जब मैं प्राथमिक स्कूल में शिक्षक था.पड़ोस में रहने वाली छोटी सी बिटिया दूसरी कक्षा में पढ़ती थी. लगभग सात वर्ष की थी. वह वार्षिक परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त की थी उनके शिक्षक ने प्रथम आने पर उसे इनाम दिया था. उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था. वह अपने सभी साथियों को प्रथम आने का समाचार दिया एवं अपने शिक्षक द्वारा दिए हुए इनाम को दिखा रही थी. वह बहुत खुश होकर घर आई और आते ही अपने मम्मी-पापा को प्रथम आने की खबर सुनाई. जब तक अपने घर में सभी सदस्यों को एवं आस पड़ोस में रहने वाले सबको यह खबर नहीं सुने तब तक उसने खाना भी नहीं खाया. यही नहीं शाम 5:00 बजे मैं अपना घर पहुंचा तब तक मेरे आने का बेसब्री से इंतजार करती रही.मैं घर के दरवाजे के पास पहुंचा ही था तुरंत हाथों में अपनी अंकसूची लेकर दौड़ती हुई

आई और मुझे दिखाकर कहने लगी अंकल जी मैं अपनी कक्षा में प्रथम आई हूँ मुझे मेरे शिक्षक ने यह इनाम दिया है. मैं उनके किए हुए कार्य की बधाई एवं हमेशा आगे बढ़ने की शुभकामनाएँ दिया.मैंने देखा उस दिन उनकी प्रसन्नता का कोई ठिकाना नहीं था. जरा सोचिए एक सात वर्ष की बच्ची अपनी तारीफ सुनकर इतनी खुश हो सकती है तो इससे हमें सीख मिलती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी तारीफ सुनना पसंद है.

विश्व के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स ने कहा था-"हर मनुष्य के दिल में यह लालसा छुपी होती है कि मुझे सराहा जाए."

अतः किसी व्यक्ति को कोई भी बात,आदत आपको अच्छी लगती है,किसी व्यक्ति द्वारा किया गया कार्य आपको पसंद आता है तो दिल खोल कर उसकी तारीफ कीजिए मुक्त कंठ से उसकी प्रशंसा कीजिए, उसके कार्य की सराहना कीजिए लेकिन ध्यान रहे प्रशंसा सच्ची होनी चाहिए अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए चापलूसी पूर्ण तारीफ ना करें, सराहना निस्वार्थ होनी चाहिए.

चापलूसी और प्रशंसा में बहुत बड़ा अंतर है समझदार व्यक्ति चापलूसी और प्रशंसा में फर्क तुरंत समझ लेता है.समझदार व्यक्ति के सामने चापलूसी सफल नहीं होती हालांकि ना समझ लोग चापलूसी को तारीफ समझ लेते हैं.ध्यान रहे चपलूसी का अर्थ है झूठी तारीफ और मेरे विचार से चापलूसी करने वाला यानि झूठी तारीफ करने वालों से दूर रहें उनकी संगत से बचें.

किसी महान विद्वान ने कहा है-"अपने पर हमला करने वाले दुश्मनों से मत डरो,बल्कि उन दोस्तों से डरो जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं."

दूसरे व्यक्तियों की अच्छी आदतों की, उनके अच्छे व्यवहार की, उनकी उपलब्धियों की, उनके अच्छे कार्यों की, उनके व्यक्तित्व के गुणों की ईमानदारी से तारीफ करें. दिल खोल कर उनकी प्रशंसा करें. आपकी सच्ची तारीफ,प्रशंसा,सराहना उन व्यक्तियों को और अधिक सकारात्मक कार्य करने और उपलब्धियां हासिल करने हेतु प्रोत्साहन का कार्य करेगी.

प्रशंसा दो तरीको से कार्य करती है-जब आप किसी की प्रशंसा करते हैं तो आप महसूस करेंगे कि आप दूसरे व्यक्तियों को प्रोत्साहित कर रहे हैं तथा उस व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है.जिस व्यक्ति की प्रशंसा की जा रही है वह प्रशंसा करने वाले की ओर आकर्षित होता है और उसके मन में प्रशंसा करने वाले व्यक्ति के प्रति सम्मान जागृत होता है.

प्रशंसा सुनकर हर व्यक्ति पसंद करता है प्रशंसा पर व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है ध्यान रखें सभी व्यक्ति प्रशंसा और सम्मान के भूखे हैं और इसे पाने के लिए कठिन से कठिन कार्य करने को तत्पर हो जाते हैं.

दूसरे व्यक्तियों से हुई गलतियों की आलोचना करने के बजाए उनमें हुए थोड़े से सुधार की भी प्रशंसा कीजिए क्योंकि जब आलोचना कम एवं प्रशंसा अधिक होती है तो लोगों को अच्छा काम करने की प्रेरणा मिलती है अतः हमें किसी की आलोचना के बजाए प्रशंसा करना सीखना चाहिए व्यक्ति में हुए थोड़े से सुधार का भी सराहना करना चाहिए इससे सामने वाले व्यक्ति को सुधारने हेतु प्रोत्साहित और प्रेरणा मिलती है.

प्रशंसा और चापलूसी में अंतर करना सीखें---

मूर्ख कौवा और लोभी लोमड़ी के बारे में एक लोकप्रिय कहानी आप सबने सुना ही होगा.एक भूखा कौवा रोटी का एक टुकड़ा पाता है और अपने भोजन का आनंद लेने के लिए एक पेड़ की शाखा पर बैठता है. एक लोमड़ी जो भूखी थी कौवे को रोटी के टुकड़े के साथ देखती है. चूंकि वह बुरी तरह से भोजन चाहती है इसलिए वह चापलूसी वाले शब्दों के साथ कौवे को चकमा देने का फैसला करता है. वह कौवे को एक सुंदर पक्षी कहकर उनकी प्रशंसा करता है.वह कहता है कि वह कौवे की मीठी आवाज सुनना पसंद करेगा और कौवे को गाने के लिए प्रेरित करता है मूर्ख कौवा मानता है कि प्रशंसा वास्तविक है और गाने के लिए अपना मुंह खोलती है रोटी का टुकड़ा नीचे गिर जाता है लोभी लोमड़ी का उद्देश्य पूरा हो जाता है.वह महसूस करता है कि लोभी लोमड़ी द्वारा मूर्ख मुझे बनाया गया.

अंतर शब्दों के आशय में निहित है आप किसी के उनके कार्यों या उसकी कमी के लिए प्रशंसा कर सकते हैं जबकि चापलूसी अस्पष्ट, अपरिभाषित और यहां तक की झूठी हो सकती है प्रशंसा और चापलूसी के बीच अंतर करने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं----

प्रशंसा एक कार्य के लिए विशिष्ट है चापलूसी एक कारण के बिना अनुकूलन है

सकारात्मक परिणामों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रशंसा योग्य उपकरण है उदाहरण के लिए एक शिक्षक यह कहकर अपने छात्र की प्रशंसा कर सकता है. "राम,पिछले सप्ताह से आपके लिखावट में सुधार हुआ. प्रशंसा के ऐसे शब्द राम को अपनी लिखावट को और बेहतर बनाने में मदद कर सकते हैं. वह जानता है कि उसके शिक्षक को क्या पसंद है और बेहतर परिणाम देने के लिए अपनी लिखावट पर काम कर सकता है हालांकि अगर शिक्षक कहता है-राम आप कक्षा में अच्छे हैं. मुझे लगता है कि "आप सबसे अच्छे हैं" यह शब्द अनिर्दिष्ट हैं,अस्पष्ट है और रिसीवर को सुधार के लिए कोई निर्देश नहीं देते हैं. राम निश्चित रूप से अपने शिक्षक से दयालु शब्द के बारे में अच्छा महसूस करते हैं लेकिन वह नहीं जानते उनकी कक्षा में बेहतर कैसे होगा.

प्रशंसा करने का इरादा करता है चापलूसी का इरादा धोखा देना है

चापलूसी से मक्खन निकल रहा है चापलूसी भरे शब्द के साथ, कोई व्यक्ति चापलूसी करने वाले व्यक्ति के लिए बिना किसी चिंता के अपने काम करने की उम्मीद करता है चापलूसी एक गुप्त उद्देश्य पर आधारित है जो केवल चापलूसी का लाभ लेती है. दूसरी और प्रशंसा जीवन के सकारात्मक पक्ष को देखने के लिए रिसीवर को प्रोत्साहित करके रिसीवर को लाभ पहुंचाती है प्रशंसा दूसरों को उनकी प्रतिभा को पहचानने, उनके आत्मसम्मान को बढ़ाने,आशा को बहाल करने और दिशा देने में मदद करती है.

चापलूसी से सावधान रहें क्योंकि चापलूसी आपको चोट पहुंचा सकती है

जिन शब्दों को मधुर शब्दों से मीठा किया जाता है.वह भोला को मूर्ख बना सकते हैं. दूसरों को आप उनके मीठे शब्दों से मत छोड़ो जिसका मतलब कुछ भी नहीं है.यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिलते हैं जो बिना कारण आपकी प्रशंसा करता है या प्रशंसा के लिए मधुर शब्दों के साथ आपको मंत्रमुग्ध करता है तो यह समय है कि आप अपने कानों को बंद कर देंऔर शब्दों को न सुनें.

अपने आप से पूछिए

क्या वह मुझे लुभाने की कोशिश कर रहा है उनके इरादे क्या है?

क्या यह शब्द सही है या गलत है?

क्या इन चापलूसी भरे शब्दों के पीछे कोई उल्टा मकसद हो सकता है?

अंत में प्रशंसा और चापलूसी को संक्षेप में समझते हैं

प्रशंसा का मतलब होता है कि कोई भी इंसान अगर कोई काम करें वह काम प्रशंसा के लायक हो और अपनी प्रशंसा कर दे तो बिल्कुल यह बहुत ही सही हैं और यदि कोई भी कार्य के लायक नहीं है अपने काम को निकालने के लिए आपने इमेज को बनाने के लिए सामने वाले में जो है प्रशंसा करें वह भी झूठी पसंद आती है चापलूसी होती है.

इन दोनों के बीच सच्चाई का फर्क होता है एक दिल से होती है, जबकि दूसरी जुबान से. एक में असलियत होती है दूसरे में स्वार्थ छिपा होता है. कुछ लोग को ईमानदारी से तारीफ सुनने एवं करने की तुलना में चापलूसी करना एवं सुनना अच्छा लगता है. हम ना तो चापलूसी करें, ना ही चापलूसी की बातों में आए.

झूठी तारीफ रेगिस्तान में मिराज (भ्रम)के समान है जैसे जैसे हम उसके नजदीक जाते हैं और ज्यादा निराशा मिलती है.

निष्कर्ष---वास्तव में प्रशंसा और चापलूसी के बीच एक बहुत ही बारीक रेखा होती है. जिसकी सही पहचान बहुत कम लोगों को होती है यही कारण है कि अच्छे-अच्छे बुद्धिजीवी भी प्रशंसा के लक्ष्मण रेखा को लांघते हुए चापलूसी के दलदल में घुसकर चापलूसी करने वाले व्यक्ति को लाभ पहुंचाते हैं.जिसके कारण वास्तविक लाभ पाने वाले व्यक्ति पिछड़ जाते हैं और लाभ देने वाला व्यक्ति अपना मान, मर्यादा व सम्मान खो देता है.

बस्तर के समाधि स्तंभ

रचनाकार-रजनी शर्मा बस्तरिया

बस्तर तुम तो सदा से थे,
शांत, मदमस्त, अचल.
अपने आप को सहेजते,
सीधे सरल पथ की तरह.

जिन्होंने तुमसे तुम्हारा वजूद,
छीनने की कोशिश की.
कभी आधुनिकता के लिए,
कभी उदर पूर्ति के लिए.

तुम कभी भी नही इतराये.
कि तुम क्या हो?
तुम्हें तुम्हारा कद
कोई क्यों बतलाए?

जब तुम खुद खड़े हो
अपने बूते पर.
उठो नाकाम करो,
इन कोशिशों, इन साजिशों को.

ये तुम्हें बना ना दे,
समाधियों का शहर.
हर पत्थर, ज़र्रा
स्तंभ की तरह,
उठो मिटने पर भी,

"इन समाधि स्तंभों की तरह"

फन्नस कुआ

रचनाकार-रजनी शर्मा बस्तरिया

फन्नस कुआ ओ फन्नस कुआ,
बोलो ना बोलो आज तुम्हे क्या हुआ.....?

पक भी जाओ भई पकने का मौसम हुआ,
बाट जोहते हैं दादा दादी और बुआ.....

कटता नही ये छाल कितना कड़ा है मुआ,
तुम्हारी खुशबू से आ पहूंचे है अब तो सुआ.....

अटकल लगाओ बच्चों किसे है कहते कुआ?
कटहल ही पक कर कहलाता है फन्नस कुआ..

चंदा मामा

रचनाकार-पुष्प लता साहू

कभी आधे तो कभी गोल,
कभी बादलों में छुप जाते हैं.
जैसे ही आते हैं सूरज काका,
हम सबसे शरमा जाते हैं..

सो जाता है जग सारा,
तब तारों के संग आते हैं.
झिलमिल सितारों के बीच,
अपनी चांदनी फैलाते हैं..

बच्चों के हैं प्यारे मामा,
सबके मन को भाते हैं.
सबसे प्यारे सबसे अच्छे,
चंदा मामा कहलाते है..

शेखीबाज छगन

रचनाकार-महेंद्र कुमार वर्मा

बहुत पुरानी बात है. रामपुर नाम का एक गाँव था. उस गाँव में लगभग सभी किसान थे. मगर भुवन की पुश्तैनी परचून की दूकान थी. वह शहर से सामान लाता और गाँव में बेचता. ज्यादातर सामान उधार में ही बिकता और फसल आने पर भुवन दिए गए उधार की रकम वसूलता. यही उसका व्यापार था.

बरसात आने वाली थी. भुवन ने सोचा शहर से दुकान के लिए सामान लाकर रख लिया जाए, जिससे बरसात में शहर जाने की जरूरत ही न हो. वैसे भी बरसात में हर जगह कीचड़ ही कीचड़ होता है.

वह शहर जाने के लिए निकल गया. उसके पास दस हजार रुपए थे. कुछ पैसे उसने जमींदार से उधार लिए थे. उसने सोचा यदि इस साल फसल अच्छी हुई तो किसान उसका पुराना उधार चुका देंगे. फिर वो जमींदार का उधार आसानी से चुका देगा.

उधर लालची जमींदार पैसे देकर सोच रहा था यदि ये पैसे भुवन से शहर पहुँचते ही छीन लिए जाएँ तो कैसा रहे. उसने अपने नौकर के हाथों छगन के नाम एक चिट्ठी भिजवाई.

छगन एक पहलवान था, वह लूटपाट से ही अपना पेट भरता था. नौकर ने छगन को चिट्ठी दी और भुवन की तरफ इशारा किया-वह रहा तुम्हारा शिकार.

भुवन अपनी राह चल पड़ा. उसके पीछे छगन था. तभी एक सूनसान जगह पर छगन ने दूर से दो सिपाहियों को आते देखा. उसने देर नहीं की और भुवन पर टूट पड़ा. तभी सिपाही नजदीक आ गए.

छगन ने उनसे कहा-मालिक, इस आदमी ने मुझ गरीब के दस हजार रुपये छीन लिए हैं. सिपाही ने भुवन की तलाशी ली और दस हज़ार रुपये भुवन से बरामद किए. फिर सिपाही दोनों को न्याय के लिए काजी के पास ले गए. वहाँ छगन ने कहा-मैंने मकान की मरम्मत के लिए सेठजी से दस हजार रुपये उधार लिए थे, वही रुपये इस परदेशी ने मुझसे छीन लिए.

भुवन ने प्रतिवाद किया-ये पैसे मै गाँव से लेकर आया था सामान खरीदने के लिए. मैं एक छोटा सा व्यापारी हूँ. सेठ जी गवाही के लिए बुलाए गए. उन्हे छगन पहले ही इशारा कर चुका था कि हाँ बोलना है. सेठ जी ने छगन के पक्ष में गवाही दी. काजी ने फैसला छगन के पक्ष में दिया. भुवन को दस हजार रूपए छगन को देने पड़े. पैसा लेकर छगन चल पड़ा अपनी राह.

जब उदास भुवन वापस जाने लगा तो बुद्धिमान काजी ने उसे बुलाकर कुछ समझाया और सिपाहियों को भी कुछ निर्देश दिए.

छगन जब सूनसान राह से गुजरा तो भुवन उससे लिपट कर रूपए छीनने लगा. तभी सिपाही पास आ गए.

छगन ने सिपाहियों को बताया-ये फिर मेरे पैसे छीन रहा था. सिपाही दोनों को फिर काजी के पास ले गए. वहाँ पहुँच कर छगन ने काजी जी से कहा-ये फिर मुझसे मेरा पैसा छीन रहा था, ये आदतन अपराधी है, इसे कड़ी सजा मिलनी चाहिए.

काजी ने गंभीर मुद्रा में कहा-अवश्य, अपराधी को अवश्य कड़ी सजा मिलेगी.

फिर काजी ने छगन से पूछा-पैसा कहाँ है?

छगन बोलै-पैसा मेरे पास ही है, इसने छीनने की कोशिश जरूर की थी, पर ये असफल रहा.

काजी-मगर ये तुमसे आसानी से पैसे छीन सकता था, तो इसने छीने क्यों नहीं. छगन अभिमान से बोला-ये पिद्दी आदमी क्या मेरे जैसे पहलवान से जीत सकता है.

काजी ने पूछा-अच्छा आप पहलवान भी हैं.

छगन ने बताया-पूरे आसपास का गाँवों में कोई भी ऐसा नहीं जो मुझे हरा सके.

काजी ने कहा-वाह तुम तो सचमुच बलवान हो. छगन मुस्कुरा दिया.

फिर काजी ने जो सवाल किया उससे छगन के होश उड़ गए और उसकी शेखीबाजी उसे ले डूबी.

काजी जी ने पूछा-अच्छा तो ये बताओ पहली बार ये कमजोर आदमी तुमसे पैसे किस तरह छीन पाया. तुम तो पहलवान हो.

अब तो छगन घबरा गया. उसका झूठ पकड़ लिया गया था. वह काजी के पैरों पर गिर कर माफी माँगने लगा.

मगर विद्वान काजी ने सेठ को फिर बुलवाया और दोनों पर एक-एक हजार रुपए का जुरमाना लगा दिया. ये रुपए उन्हें भुवन को देने पड़े. शाम को भुवन हँसी ख़ुशी सामान लेकर अपने गाँव लौट आया.

व्हाट्सएप

रचनाकार-स्व. महेंद्र देवांगन "माटी"

रहते हैं सब दूर-दूर पर.
मन में कमल खिलते हैं.
व्हाट्सएप का कमाल तो देखो.
एक जगह सब मिलते हैं..

सुबह-सुबह जब आँखें खुलती.
झट से मोबाइल देखते हैं.
सुप्रभात और गुड़ मॉर्निंग का.
मैसेज सबको भेजते हैं..

चाय की प्याला लिये हाथ में.
की-बोर्ड पर ऊँगली रहती हैं.
चाय की चुस्की मार-मार कर.
हाय-हैलो सब करते हैं..

कोई बन्दा सीधा-साधा.
कोई बहुत है खाटी.
सबको प्रणाम करने आया.
छत्तीसगढ़ का "माटी"..

तोर महिमा महान

रचनाकार-श्रवण कुमार साहू "प्रखर"

नारी तोर महिमा, सहीच म महान हे.
तभे तोर शक्ति ल, माने भगवान हे..

नाना किसिम के तोर हावय रूप,
तिहि ह सहिथस जिंनगी के धूप..
राम संग रही के, सीताराम बनगेस,
श्याम संग जुड़े त, राधेश्याम बनगेस.
तोर बिन अधूरा, मानों स्वयं भगवान हे----

दाई बनके तेंहा, बेटा ल सिरजाए,
नारी बन तेहा ओ, नर ल सिधाए.
बहिनी बनके भाई के, भार ल तै बोहे,
बेटी बनके ददा के, प्यार ल तै जोहे.
तोर कोख ले पैदा होथे, लवकुश संतान हे-----

बेटी बनके तेहा संस्कार बन जाथस,
बहू बनके जग के व्यवहार बन जाथस.
जेन घर म जाथस खुशी संग म लाथस,
जिंहा ले तै जाथस, दुआ देके आथस..
दया धरम के नारी सौंहत परमान हे-----

ते हाबस तभे तो, ये सृष्टि म दम हे.
दूसर ल खुश रखे, चाहे लाखों गम हे..
मोर सबला बेटी के, आँखी ह काबर नम हे.
तोर महिमा लिखे बर, मोर स्याही ह कम हे..
तोर जस ल गावंव, बस इही तोर सनमान हे

चीन को चेतावनी

रचनाकार-स्व. महेंद्र देवांगन "माटी"

आँख दिखाना छोड़ो हमको, नहीं किसी से डरते हैं.
हम भारत के वीर सिपाही, कफ़न बाँध कर लड़ते हैं..

एक कदम तुम आगे आओ, पैर काट कर रख देंगे.
वतन बचाने के खातिर हम, इतिहास नया लिख देंगे..

चलो नहीं अब चाल चीन तुम, हमसे जो टकराओगे.
याद करोगे नानी अपनी, पाछे फिर पछताओगे..

छोटी छोटी आँखे तेरी, बिल्ली जैसी लगते हो.
हाथ मिलाकर भारत से तुम, गद्दारी ही करते हो..

व्यर्थ नहीं जाएगा अब ये, वीरों की यह बलिदानी.
बदला लेकर ही छोड़ेंगे, नहीं मिलेगा अब पानी..

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी -

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक द्वारा भेजी गई कहानी

बारिश का वह दिन

रोज की तरह आकाश तैयार होकर स्कूल गया. आज शिक्षक बारिश से संबंधित पाठ पढ़ाने वाले हैं. शिक्षक ने सभी बच्चों से बारिश से संबंधित कुछ प्रश्न पूछे. सभी बच्चों ने अपने-अपने अनुभव के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दिए. आकाश की बारी आईबर आकाश ने संकोच के साथ 'बारिश का वह दिन' जो उसके साथ घटित हुआ,वह बताया. सभी बच्चे और शिक्षक आकाश की बातों को ध्यान से सुनने लगे.

गुरुदेव! कुछ दिन पहले जब वर्षा हो रही थी, पानी की बूँदें धीमी थीं, स्कूल में छुट्टी की घंटी बज चुकी थी.सभी पालक अपने अपने बच्चों को लेने पहुँचे थे. लगभग सभी के पास बारिश से बचने के लिए रेनकोट या छाता था लेकिन मुझे पैदल ही अपने घर पहुँचना था.मेरे मम्मी-पापा अपने-अपने काम पर जाते हैं, जिसकी वजह से वे मुझे लेने नहीं आ सकते. न ही मेरे पास छाता था. मैं मस्ती करते हुए बरसात का मजा लेने स्कूल से निकल गया. कुछ दूर जाने पर पानी की गति इतनी तेज हो गई कि मुझे रास्ता दिखाई नहीं पड़ रहा था. चलना मुश्किल हो गया था, मैं पूरी तरह भीग गया था.मेरा शरीर ठंड से काँप रहा था,दाँत बज रहे थे. मैं वही एक पेड़ के नीचे बैठ गया.मुझे क्या करना है यह समझ में नहीं आ रहा था. कुछ समय बाद मेरी कक्षा में पढ़ने वाली रिया कार में अपने पापा के साथ निकली,उसने मुझे भीगते हुए देखा लेकिन कुछ कहा नहीं. कुछ दूर जाने के कार वापस आई. रिया मेरे पास आकर मुझे अपनी कार में बैठने बोली. मैं पूरी तरह भीग गया था, मुझे लगा कि मैं बैठूँगा तो कार गंदी हो जाएगी, यह सोचकर मैंने मना कर दिया लेकिन रिया के पापा ने भी कहा तो मैं कार में बैठ गया. अपने घर ले जाकर मुझे सूखे कपड़े दिए और मुझे घर छोड़ा. रिया के पापा ने घर जाते समय मुझे अपने पास बुलाकर छाता देते हुए कहा-बेटा यह बरसात में तुम्हारे काम आएगा. प्रेम से दिए हुए इस उपहार को लेने से मैं मना न कर सका. मैंने हाथ जोड़कर उन्हें धन्यवाद दिया. मैं रिया एवं उसके पापा द्वारा की गई सहायता और उस बारिश के दिन को कभी भूल ना पाऊँगा.

रिया भी कक्षा में बैठी थी.रिया की इस सहयोग की भावना के बारे में जानकर शिक्षक एवं सभी बच्चों ने तालियाँ बजाकर रिया की सराहना की.

शालिनीपंकज दुबे द्वारा भेजी गई कहानी

बारिश का वह दिन

उस दिन स्कूल की छुट्टी के बाद घर के लिए निकलने ही वाले थे कि बारिश होने लगी. कुछ ही देर में बच्चे रंगबिरंगी छतरियाँ ताने सड़क पर यूँ निकले मानो रंगबिरंगी तितलियाँ उड़ रही हों. कोई सड़क पर मस्ती करता तो कोई अपनी मतवाली चाल से चल रहा था. निशु के दोस्त टिक्कू व मीनू कागज का जहाज बनाकर उसे तैराने लगे. वो खुश होकर जोर से चिल्लाते हुए अपने जहाज के साथ-साथ चल रहे थे. तभी निशु को "म्याऊँ" की आवाज सुनाई दी. कागज की नाव चलाने व उसको बहते देखने का अलग ही आनन्द होता है. निशु ने झट से पलटकर छतरी बिल्ली के ऊपर तान दी. बिल्ली को सुरक्षित जगह पर पहुँचाने गया. तब उसे ख्याल आया कि वो तो पूरी तरह भीग चुका है. पलटा तो देखा उसके दोस्तों ने भी अपनी-अपनी छतरियाँ हटा दी व सभी भीग गए थे. सभी ने मिलकर फिर कागज की नाव बनाई व हँसते खिलखिलाते अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल**kilolmagazine@gmail.com** पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगल अंक में प्रकाशित करेंगे

गूंगे की वाणी

रचनाकार-सोमेश देवांगन

मैं गूंगा कहता अपनी वाणी की कहानी.
मेरी वाणी ही तो है मेरी असल निशानी..

वाणी मेरी सब से अलग मै हूँ मूक-बधिर.
आ-आ कहते हुए धरता हूँ मै धीर..

कोई न समझता वाणी मेरी हे मेरे रघुवीर.
बोल न पाता कहीं भी बहता आंखों से नीर..

वाणी मेरी बन गया हँसी मजाक का ठिकाना.
बोलने वालों का है दुनिया में हर कोई दीवाना..

जुबान की कीमत समझा रह हमें जमाना.
लेकिन बिन जुबान के हमें है नाम कमाना..

अपनी पीड़ा कहूँ तो कैसे कहूँ नही है जुबान.
पकड़े बैठा हूँ तीर को नही है मेरे पास कमान..

हे राम सब कुछ दिया पर कर दियाहमें बेजुबान.
वाणी बन गयी है सबके लिए हँसी का सामान..

शबरी

रचनाकार-प्रिया देवांगन "प्रियू"

राम-राम की रटन लगाई.
उम्र बिता तब दर्शन पाई..
प्रतिदिन राहे फूल बिछाती.
राम दरश की आस लगाती..

ऋषि मुनि की वह सेवा करती.
भक्ति भाव से तन-मन भरती..
राम लखन के जब दर्शन पावे.
नैनो से अपने नीर बहावे..

शबरी कुटिया खुशियाँ आई.
राम लखन को भीतर लाई..
आँखों में विश्वास जगाई.
राम लखन की चरण धुलाई..

चख-चख मीठे बेर खिलाई.
शबरी माता भाग्य जगाई..
भक्ति देख ईश्वर है हारे.
राम दरश कर जीवन तारे..

बेटी

रचनाकार-जितेन्द्र कुमार सिन्हा

बेटी तू चमक आसमान में सूरज बन,
बेटी तू दमक जहान में हीरा बन,
आंसू आँखों में खुद के दर्द के लिए नहीं,
दूसरो के दर्द के लिए बहे,
तेरे खून का कतरा -कतरा
देश और देशवासियों के लिए बहे..

तुझे उड़ना सिखा रहा हूँ,
दुनिया कैसी है दिखा रहा हूँ,
बदल दे ऐसी ख्वाहिश नहीं ,
पर पंख लगा के सपने पूरा कर,
इसलिए फर्ज निभा रहा हूँबेट.
सुन बेटी..

कुछ रोकेंगे ,कुछ टोकेंगे,
कुछ क़दमो में काँटे बोयेंगे,
रुकना नहीं, झुकना नहीं
बन जा सूरज ,दीपक बन बुझना नहीं.
सुन बेटी..

ममता का जादू है हाथों में,
बेबस न होना बातों में,
आइना जब भी देखना
सूरत नहीं हौसलों को देखना,
लंबे फासले है अभी जीवन के,
मुड़कर कभी न देखना.

टपकते पसीने,दर्द से ऐंठते देखता हूँ,
हर पल आशीष तुम्हे देता हूं,
लिख दे एक इतिहास हर पन्ने पर
स्याही तेरे पसीना हो.
वो किताब हमारे लिए नगीना हो..

मड़ई मेला

रचनाकार-सपना यदु

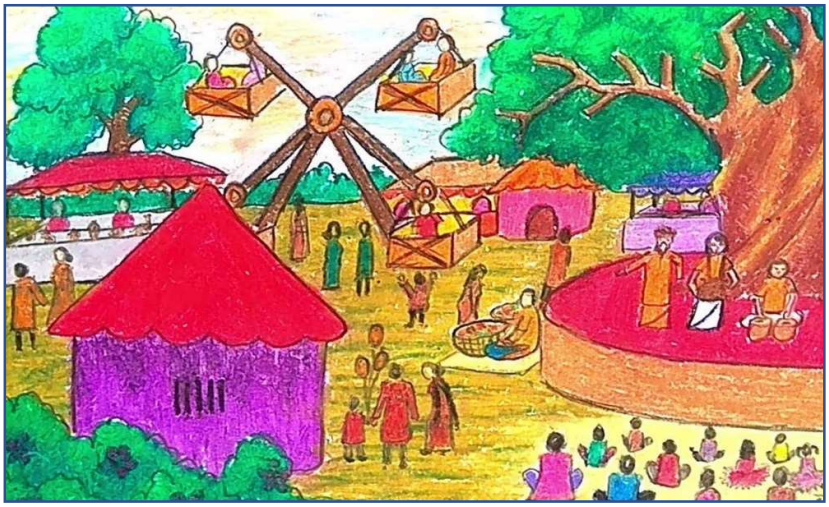

आगे रे संगी मड़ई मेला,
लगे हे कुल्फी अउ चाट के ठेला.
कौनो देखे नाचा गम्मत
कौनो झूले झूला..

कौनो देखे सरकस अउ,
कौनो देखे मौत के कुआँ.
घूम-घूम के खुश होवत हे
देखौ मौसी अउ बुआ..

किसम किसम के खई-खजाना
लइका मन हर खाथे.
टिकली, फूंदरी अउ चूरी,
दाई-ददा ल लेवाथे..

कौनो ला चघे देवता,
कौनी डांग खेलाये
कौनो लावय आंगा,
देखे बर सबो झन जावय..

मड़ई मेला जस तीज-तिहार,
घर मा आथे सगा-सील.
होथे सबके मेल मिलाप,
खुशी ले दिल जाथे मिल..

भाखा जनऊला

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

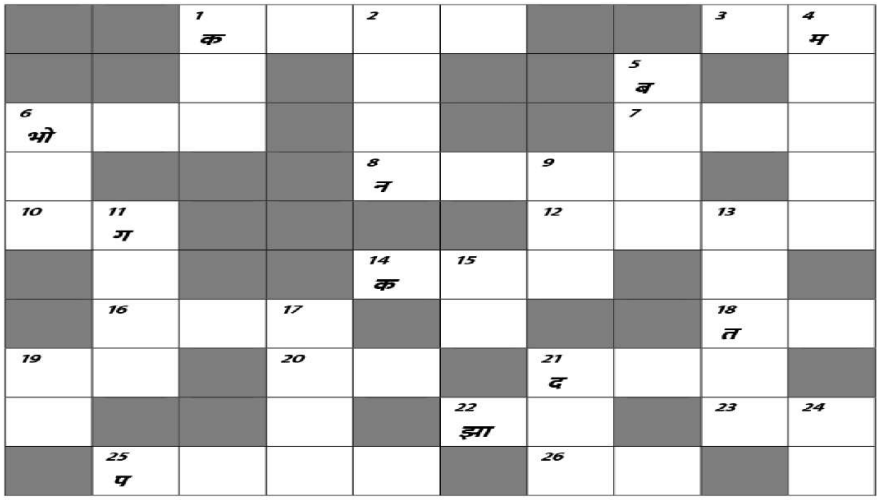

बाएँ से दाएँ:- 1. कान के नीचे 3. जामुन 6. नासमझ 7. उपाय 8. नर्तक 10. रिश्ता 12. ईष्यालु 14. वादा 16. ऐसे 18. नीचे, तली 19. शरीर, तन 20. बरगद (हिन्दी) 21. बिछौना 22. तीखा 23. चुगली 25. विश्वास करना 26. मीठा

ऊपर से नीचे:- 1. काना 2. परसों 4. रंगीला व्यक्ति 5. उपयोग किया 6. पोपला 9. किसका 11. गायक 13. प्रसिद्ध लोकनृत्य 15. पका (भोजन) 17. नवेला/ नवेली 19. किसको 21. अनार 24. खाली

पिछले अंक के भाखा जनउला के उत्तर